हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

संगम - तृतीय संस्करण

सितंबर - 2025

हडको चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय

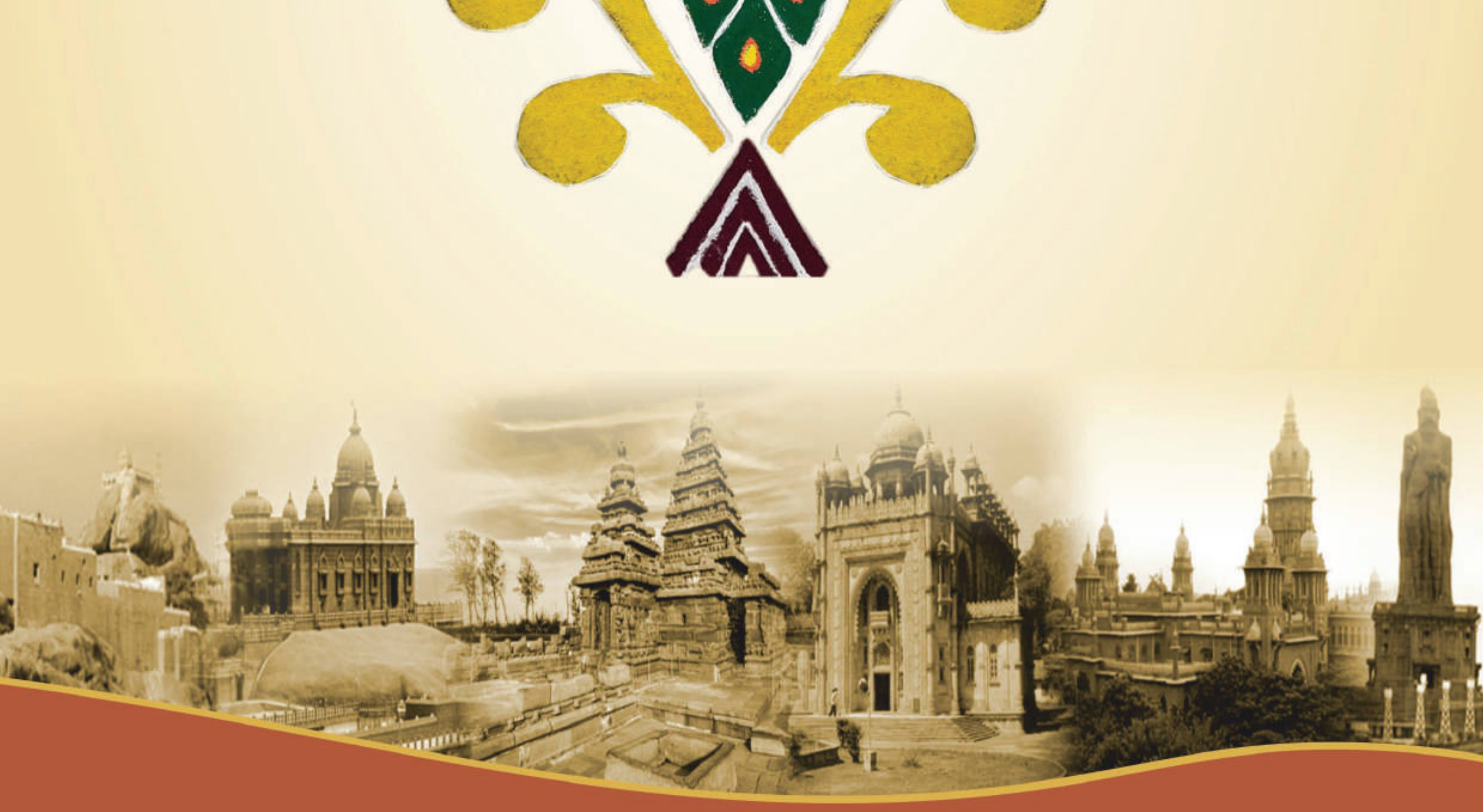

माननीय आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार की ओर से 19.07.2025 को चेन्नई में समीक्षा बैठक

माननीय आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री तोखन साहू ने 19.07.2025 एवं 20.07.2025 को चेन्नई का दौरा किया। इस दौरान, माननीय राज्य मंत्री ने हडको कार्यों की समीक्षा की। श्री वी.टी. सुब्रमण्यन, कार्यकारी निदेशक, चेन्नई ने हडको की वर्तमान परियोजनाओं और आगामी विकासात्मक पहलों सहित चेन्नई में हडको कार्य प्रचालनों पर एक प्रस्तुति दी।

माननीय राज्य मंत्री ने हडको चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय को राज्य सरकार के साथ मिलकर काम करने तथा बुनियादी ढांचे और आवास के क्षेत्र में राज्य सरकार की विभिन्न नई विकास पहलों में हडको के वित्तपोषण की संभावनाओं को खोजने पर जोर दिया।

हडको चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए पुरस्कार प्राप्ति

28 जुलाई, 2025 को भारतीय खाद्य निगम लिमिटेड की अध्यक्षता में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नै की 16वीं छमाही बैठक में हडको चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय को वर्ष 2024-2025 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । नगर राजभाषा कार्यान्वयन (उपक्रम) चेन्नै में कुल 65 सदस्य कार्यालय हैं।

संगम - हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै की गृह पत्रिका		
तृतीय संस्करण		
संरक्षक	**अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हडको का संदेश**	
	निदेशक का. प्ला., हडको का संदेश	
वी.टी. सुब्रमणियन	**निदेशक वित्त, हडको का संदेश**	
क्षेत्रीय प्रमुख, चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय	**क्षेत्रीय प्रमुख, चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय का संदेश**	
	संपादकीय	
सम्पादक		
नरेन्द्र कुमार	क्र. सं.	शीर्षक
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)	1.	लक्ष्य बनाम उपलब्धि के दशकीय रुझान
	2.	चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय को "व्यावसायिक संचालन में उत्कृष्ट प्रदर्शन पुरस्कार
प्रकाशन सहायता सेवाएँ	3.	व्यवसाय विकास बैठकें
पी.जी. जयश्री	4.	स्वतंत्र निदेशक द्वारा सीएसआर परियोजना का दौरा
प्रबन्धक सचि., चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय	5.	**लेख :** भूमि को संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए आवास का पुनर्विकास तमिलनाडु शहरी आवास और विकास बोर्ड के लिए हडको चेन्नई द्वारा विकसित मॉडल
विशेष आभार	6.	**लेख:** पीएमएवाई शहरी मिशन को सुगम बनाने में हडको की भूमिका
ए. उमा	7.	**कविता:** महिला दिवस
संयुक्त महाप्रबंधक आई.टी., चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय	8.	अरुलमिघु मारियम्मन मंदिर समयपुरम के लिए कतार परिसर का विकास
	9.	**लेख :** स्मृति के झरोखे से
सहयोग	10.	सीएसआर में चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय का योगदान
चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिक	11, 12	हडको की सीएसआर पहल
	13.	हिन्दी पखवाडा 2024
	14.	हडको की सीएसआर पहल
पत्र व्यवहार का पता	15.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 का पालन
क्षेत्रीय प्रमुख	16.	क्षे.राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम मैसूर
5 वीं मंजिल, तालमुत्तु नटराजन बिल्डिंग	17.	हडको वार्षिक खेल दिवस 2025
1, गांधी इर्विन रोड, एगमोर, चेन्नै	18.	हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन
ई मेल : cro@hudco.org	19.	विश्व-पर्यावरण दिवस का आयोजन
वेब साइट : www.hudco.org.in	20.	11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन
	21.	**लेख:** योग का अभ्यास करें ताकि राजयोग की प्राप्ति हो
	22.	**लेख:** हडको में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपादेयता
	23.	राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती समारोह –नई दिल्ली
	24.	**कविता:** माँ
	25.	स्वच्छता अभियान - अभिलेखों की छंटाई और निपटान
	26.	**लेख:** समर्पित आँखें : कन्नप्पा की कहानी
	27.	**लेख:** तिरुमलय दर्शन : प्रसिद्ध तीर्थस्थल
	28.	राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती समारोह – हैदराबाद
	29.	**लेख:** काबुलीवाला
	30.	स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताएं
	31.	वार्षिक दिवस समारोह/जन्मदिन/सेवानिवृत्ति समारोह
निशुल्क वितरण के लिए	पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों के लिए संबन्धित लेखक उत्तरदायी है |	

लक्ष्य बनाम उपलब्धि के दशकीय रुझान

स्वीकृति

पिछले दशक में प्राप्त लक्ष्य

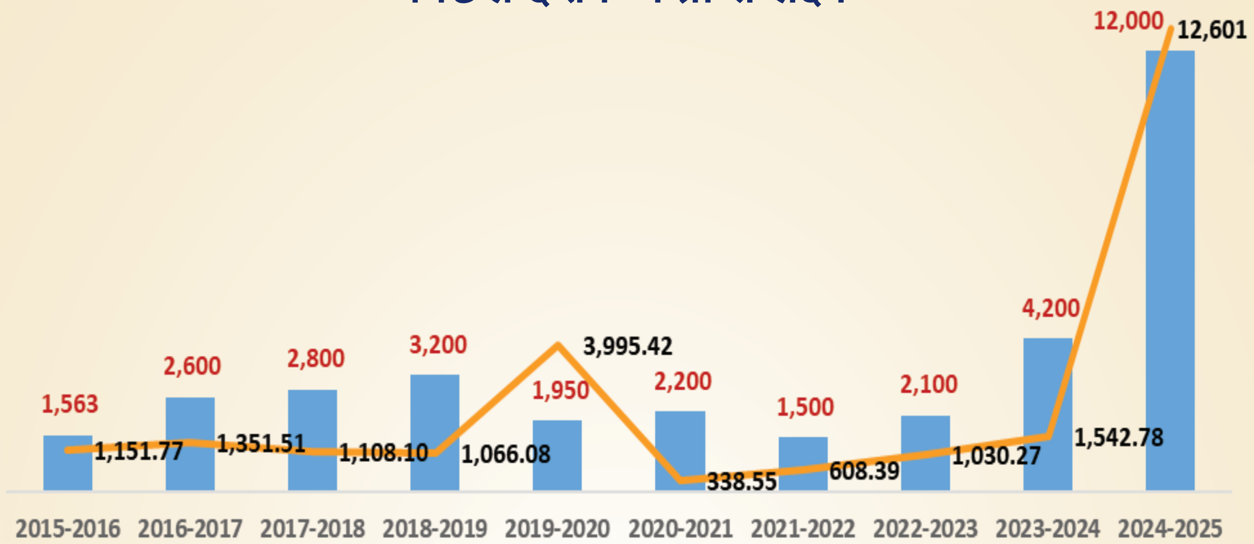

संवितरण

उच्चतम लक्ष्य प्राप्त किया गया

संचयी परिचालन - चेन्नई क्षेत्र

(करोड़ रुपए में)

आवास योजनाएँ और अन्य				शहरी बुनियादी ढाँचा योजनाएँ			**कुल**		
संख्या	परियोजना लागत	**ऋण राशि**	घरों/आवास इकाइयों की संख्या	संख्या	परियोजना लागत	**ऋण राशि**	योजनाएँ की संख्या	परियोजना लागत	**ऋण राशि**
2106	6907.34	3935.93	1552076	280	52847.80	**27321.11**	**2386**	**59755.15**	**31257.04**

संबोधन

भारत भूमि अनेक भाषाओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों एवं बहुविध खानपान से पल्लवित-पोषित, एकनिष्ठ संस्कृति का अनुपम उदाहरण है। बहुविध, बहुपक्ष अनेकता होने पर भी इन सभी का ऐक्य भाव हमारी विपुल सांस्कृतिक धरोहर की एकता का मूलाधार है। सरल शब्दों में कहें तो हमारी अपनी अनेक भाषाएँ हैं और सभी अपनी हैं, हमारी अनेक परम्पराएँ हैं और सभी अपनी हैं, हमारे अनेक रीति -रिवाज़, अनेक खान-पान और अनेक आस्था पद्धतियाँ, अनेक होने पर भी हमारे हैं, एक हैं। ऐसा अनुपम एवं अद्वितीय, अनूठा उदाहरण अन्यत्र सहज सुलभ नहीं।

यही कारण है कि एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में भी सहज प्रयोग देखने को मिल जाता है। एक भू-भाग के रीति-रिवाज कहीं-न-कहीं दूसरे भू-भाग से मेल खाते हैं। इस लिहाज़ से हिन्दी भाषा भी दूसरी अनेक भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार से पोषित एवं लाभान्वित होती रही है और इसी कारण उनकी ऋणी भी है। यूं तो अपने का अपने से लेन-देन, ऋणभाव नहीं अपितु स्नेहभाव है, अपनापन है, सहजता है। पुनः यही तथ्य निकल कर सामने आता है कि हम बाहर से अनेक होने पर भी भीतर से तो एक ही हुए।

जिस प्रकार एक परिवार के अनेक सदस्यों का आपस में कोई वैर भाव नहीं होता एवं उनकी आपसी तुलना का कोई प्रश्न नहीं होता, ठीक उसी प्रकार हिन्दी भाषा का भी अन्य भारतीय भाषायों से कोई वैमनस्य भाव नहीं, कोई प्रतियोगिता नहीं। एक राष्ट्र की अनेक भाषायों में से कोई भी भाषा बड़ी या छोटी नहीं हो सकती। किसी भी भाषा के उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट होने का प्रश्न ही नहीं बनता।

इस भाषिक वैविध्य में हिन्दी का भी अप्रतिम योगदान निर्विवाद है। सरकारी कामकाज को राजभाषा में करने के सांविधिक दायित्व निर्वहन में अन्य भारतीय भाषाओं की शब्द-संपदा के भरपूर समायोजन से कोई रोक नहीं है। निज भाषा प्रयोग, निज उन्नति की ही परिचायक है।

यह मेरे लिए अत्यंत सुखद समाचार है कि दक्षिण अंचल स्थित चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा में अपनी गृह पत्रिका "संगम" के ई-संस्करण का प्रकाशन कर रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में इस पत्रिका का प्रकाशन निश्चित रूप से सराहनीय है। सम्पूर्ण संपादक मण्डल इस महती कार्य के लिए बधाई का पात्र है। हिन्दी दिवस की शुभकामनायों सहित

संजय कुलश्रेष्ठ

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको का चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह-पत्रिका "संगम" के आगामी ई-संस्करण का प्रकाशन कर रहा है। मेरा मानना है कि हिन्दी, भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ क्षेत्रीय संपर्कों की समन्वयक एवं संपर्क वाहिका भी है। हिन्दी व्याकरणिक दृष्टि से सशक्त होने के साथ-साथ सर्वाधिक जन-प्रचलित भाषा का दर्जा भी रखती है। जहां तक हिन्दी के राजभाषा स्वरूप का प्रश्न है, मेरा मानना है कि हिन्दी सरकारी काम-काज में अपने सरलतम रूप में प्रयुक्त किए जाने की अपेक्षा रखती है, ताकि इसका आयाम और भी व्यापक एवं समृद्ध बन सके। हिन्दी का व्यापक जानाधार स्थापित करने में भी इसकी सरलता अनिवार्य है।

राजभाषा के प्रयोग संवर्धन में पत्रिका प्रकाशन के लिए चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय को मेरी ओर से अनेक शुभकामनाएं।

एम. नागराज
निदेशक कार्पोरेट प्लानिंग

संबोधन

आधुनिक समाज में भाषा हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ हमारी आजीविका का साधन भी है। ऐसे में बाज़ार में अपनी पकड़ को मज़बूत बनाने तथा अपना व्यापक जनाधार स्थापित करने के लिए जनता की भाषा में अपना सामान बेचना समय की मांग है। वैश्विक जगत के अन्य देश जब अपना सामान हमारे देश में बेचने के लिए भारतीय भाषाएँ सीख सकते हैं तो हम व्यापक जन भाषा को अपने व्यापार में प्रयोग क्यों नहीं कर सकते। अपने कार्य-व्यापार में हिन्दी भाषा का प्रयोग न सिर्फ हमारा कारोबार बढ़ाएगा अपितु आम जन मानस में हमारी पैठ भी मज़बूत करेगा। आम जनता के लिए कार्यरत हडको के लिए आम जनता की भाषा का प्रयोग तो और भी जरूरी हो जाता है।

इस प्रयास में हडको क्षेत्रीय कार्यालय की पत्रिका "संगम" के प्रकाशन का समाचार निश्चित रूप से सराहनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन की अनेक शुभकामनाएं।

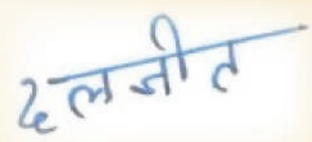

दलजीत सिंह खत्री
निदेशक वित्त

संबोधन

यह मेरे लिए गर्व का विषय है कि मेरे नेतृत्व में चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय की आंतरिक गृह-पत्रिका संगम के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। देश के अधिकतर हिंदीतर भाषी दक्षिण क्षेत्रों में राजभाषा के प्रयोग की उत्तर भारत से तुलनात्मक रूप में मंद गति, सहज है और शिथिल भी है, यह तथ्य निर्विवाद है। किन्तु भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं सकारात्मक प्रयासों से हालात इतने भी खराब नहीं कि इसे निम्नतम स्तर का कहा जाए। इसका बड़ा श्रेय सरकारी नीतियों एवं उन्हे क्रियान्वित करने वाले अधिकारियों को जाता है। दक्षिण भारतीय मातृ भाषाओं के बीच भी हिन्दी भाषा का पल्लवन प्रशंसनीय है। अंग्रेज़ी भाषा का वर्चस्व, अंग्रेज़ी में सहायक सामग्री की सहज उपलब्धता और बड़े स्तर के अधिकारियों की अंग्रेज़ी पढ़ाई की पृष्ठभूमि भी कार्यालयों में राजभाषा की मंद गति के बड़े कारण बनते हैं। सरकारी कार्यालयों में अपने कारोबार पर भाषा की तुलना में ज़्यादा ध्यान दिया जाना, राजभाषा उपेक्षा का एक नैसर्गिक कारण है। किन्तु यह बात साझा करना मेरे लिए गर्व की बात है कि चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय जहां एक ओर अपने कारोबारी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहा है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा के क्षेत्र में भी इसकी स्थिति नगर के अन्य सरकारी कार्यालयों की तुलना में बेहतर है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नै से हाल ही में विगत वर्ष के उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के किए गए कार्यों के प्रतिफल में कार्यालय को प्राप्त द्वितीय पुरस्कार इसका उदाहरण है।

आशा करता हूँ कि आगामी कार्यकाल में भी चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय कारोबारी लक्ष्यों के समान राजभाषा के क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित करता रहेगा।

वी टी सुब्रमण्यन

कार्यकारी निदेशक

संपादकीय

प्रत्येक शब्द का अपना इतिहास होता है। जन्म लेने वाला प्रत्येक शब्द अपने निहित अर्थ अथवा अर्थों में अपने आप को सहज महसूस करता है और निहितार्थ में प्रयोग की अपेक्षा भी रखता है। शब्द का इतर अर्थ प्रयोग "अंधों का अंधा" वाली स्थिति पैदा करता है। शब्दों का अबूझ प्रयोग, मिठाई में नमक मिलाने के समान होता है और इससे न केवल शब्द उपादेयता की क्षति होती है अपितु शब्द - सामर्थ्य पर भी कुठाराघात पड़ता है। अभिनव प्रयोग के नाम पर किसी भी उच्छिष्ट ज्ञान को पोषित तो नहीं किया जा सकता। संस्कृत के व्यापक वैज्ञानिक व्याकरण आधार तथा भारतीय भाषाओं के समुन्नत योगदान से निर्मित, विपुल हिंदी भाषा भंडार को यूं ही हल्के में लेने की भूल तो बिल्कुल नहीं की जा सकती। आप इसे शब्द सम्मान भी कह सकते हैं।

अबोध बालक क्षम्य गलतियाँ करता है, वहीं विषय के जानकार को उन्हीं त्रुटियों के लिए माफ नहीं किया जाता। इसे यूं भी कह सकते हैं कि क्षम्य-अक्षम्य में भेद, बोध-अबोध के कारण होता है। अब इसी बात को हिंदी भाषा पर भी लागू कर सकते हैं। पकी फसल की, कच्ची फसल से ज़्यादा देखभाल करनी होती है। कहना न होगा कि बाद में की गई त्रुटि पहले की सम्पूर्ण मेहनत पर पानी फेर सकती है।

हिंदी भाषियों को कहने और बोलने में अंतर को गहराई से सोचना पड़ेगा। लिखना और कुछ भी लिख देना, में ख़ासा फर्क होता है। विषय के जानकार विषय का जितना अहित कर सकते हैं, विषय न जानने वालों से विषय के उतने अहित का डर नहीं रहता। जान-बूझ कर किया गया कत्ल और भूलवश हुए खून में अंतर को तो सभी समझते हैं।

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय को वर्ष 2024-25 के लिए “व्यावसायिक संचालन में उत्कृष्ट प्रदर्शन पुरस्कार” से सम्मानित किया गया

व्यवसाय विकास बैठकें

तमिलनाडु के बुनियादी ढांचे के विकास में हडको की बड़ी भूमिका लाने के प्रयास तमिलनाडु सरकार के माननीय वित्त मंत्री श्री थंगम थेन्नारसु से मुलाकात

पुडुचेरी सरकार के साथ हडको के सहयोग को फिर से जागृत करने के लिए माननीय मुख्यमंत्री और पुडुचेरी सरकार के अन्य मंत्रियों और सचिवों से मुलाकात

हडको की स्वतंत्र निदेशक श्रीमती सबिता बोजन द्वारा सीएसआर परियोजना का दौरा

हडको की स्वतंत्र निदेशक श्रीमती सबिता बोजन ने 02.07.2025 को कैंसर संस्थान, अड्यार (चेन्नई) और सीएसआर के अंतर्गत चेन्नई के मरीना बीच सर्विस रोड पर वॉकवे के पास दिव्यांगजनों के लिए सुलभ शौचालय इकाई के निर्माण का दौरा किया।

हडको की स्वतंत्र निदेशक श्रीमती सबिता बोजन ने कैंसर संस्थान, अड्यार, चेन्नई की निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. कल्पना बालकृष्णन से मुलाकात की और संस्थान द्वारा कैंसर रोगियों के लिए प्रदान की जा रही सेवाओं की सराहना की।

चर्चा के दौरान, निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कैंसर संस्थान के कार्यों, मौजूदा बुनियादी ढाँचे जैसे चिकित्सा उपकरण, रोगियों के लिए प्रदान की जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं आदि के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा, निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बताया कि सार्वजनिक क्षेत्र की एजेंसियाँ कैंसर रोगियों के इलाज के लिए सीएसआर के अंतर्गत चिकित्सा उपकरण प्रदान करने के लिए इच्छुक हैं और उन्होंने प्रस्ताव पर विचार करने के लिए हडको को धन्यवाद दिया।

चेन्नई के मरीना बीच सर्विस रोड पर वॉकवे के पास दिव्यांगजनों के लिए सुलभ और अनुकूल शौचालय इकाई का निर्माण:

हडको की स्वतंत्र निदेशक ने उपर्युक्त परियोजना स्थल का दौरा किया है। ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन के अधिकारियों ने बताया है कि कार्य पूरा हो गया है और यह सुविधा दिव्यांगजनों के लिए उपयोग में लाई जा रही है।

भूमि को संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए आवास का पुनर्विकास
तमिलनाडु शहरी आवास और विकास बोर्ड के लिए हडको चेन्नई द्वारा विकसित मॉडल

जॉन जोसफ वडशोरी

पृष्ठभूमि:-

तमिलनाडु शहरी आवास एवं विकास बोर्ड ने शहरी पुनर्विकास/नवीनीकरण के लिए "भूमि एक संसाधन" सिद्धांत पर चेन्नई शहरी क्षेत्रों में मौजूदा मूल्यवान शहरी भूमि क्षेत्रों का पुनर्विकास करने का एक प्रस्ताव रखा है, जिसमें पुराने और जीर्ण-शीर्ण ईडब्ल्यूएस आवासों के साथ संबद्ध सुविधाएँ मौजूद हैं। भूमि के पुनः उपयोग की इस अवधारणा पर वर्तमान में विचार किया जा रहा है, ताकि अतिरिक्त भूमि को मुक्त करके राज्य को अधिकतम राजस्व प्राप्त हो सके और मुफ्त ईडब्ल्यूएस आवास के निरंतर प्रावधान के लिए मांगे गए सीमित राज्य बजटीय संसाधनों पर दबाव कम से कम पड़े ।

भारत के अन्य प्रमुख शहरों जैसे दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद आदि में विभिन्न शहरी पुनर्विकास परियोजनाओं और शहरी आवास परियोजनाओं से प्रमुख परियोजना राजस्व उत्पन्न करने के लिए मूल्यवान आंतरिक-शहर की भूमि का उपयोग करने की संभावनाओं का पता लगाया गया है यह अवधारणा तमिलनाडु में शुरुवाती अवस्था में है। इसलिए परियोजना को लागू करने वाले राज्य एजेंसी के अधिकारियों को इस जटिल प्रकृति की परियोजनाओं के निर्माण, विकास और कार्यान्वयन के लिए आवश्यक परख, दृष्टिकोण, डिज़ाइन और पेशेवर सहायता की आवश्यकता होती है।.

तमिलनाडु बोर्ड ने हडको की पेशेवर टीम, हडको कंसल्टेंसी सर्विसेज से संपर्क किया है। इस टीम को ब्राउन फील्ड परियोजनाओं पर पूर्व-व्यवहार्यता अध्ययन प्रदान करने के लिए कहा गया है, ताकि अन्य मिश्रित उपयोगों के साथ आवास के पुनर्विकास के लिए "भूमि को एक संसाधन के रूप में" उपयोग करने की संभावना का पता लगाया जा सके। इसके तहत तमिलनाडु बोर्ड संभावित शहरी स्थानों की पहचान करने की प्रक्रिया में है, जिनमें से दो टी. नगर क्षेत्र में कामराज नगर और ललितपुरम झुग्गी बस्तियों का हडको टीम द्वारा ईडब्ल्यूएस निवासियों के मौजूदा आवासों के साथ बातचीत करने और भूमि के पुनः उपयोग के अवसरों की खोज करने के लिए संयुक्त रूप से दौरा किया गया।

परियोजना की आवश्यकता:-

लगभग 1 हेक्टेयर की यह साइट जी+3 और जी+2 संरचना में 440 ईडब्ल्यूएस मकान प्रदान करती है, जिसका निर्माण तमिलनाडु बोर्ड ने क्रमशः 1977 और 1980 में चेन्नई के शहरीकरण के शुरुआती चरण में किया था। चूंकि ये मौजूदा मकान अब 40 साल से अधिक पुराने हैं, इसलिए भवन की सुरक्षा और स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए तमिलनाडु बोर्ड की तकनीकी समिति ने मौजूदा मकानों को ध्वस्त करने और पुनर्निर्माण की सिफारिश की है। इसके अलावा, जैसे-जैसे साल बीतते गए, लगभग 60 अतिक्रमणकारियों ने अपने आश्रयों के सहारे के रूप में मौजूदा लंबी परिसर की दीवार का उपयोग करके अस्थायी घर बना लिए। इसलिए बोर्ड ने परिवारों की मौजूदा जीवन स्थितियों को सुरक्षित रखने के लिए उन्हें उसी स्थान पर बनाए रखने के लिए प्रमुख शहरी भूमि के इस टुकड़े का पुनर्विकास करने का प्रस्ताव रखा है ।

शहरी भूमि की न्यूनतम उपलब्धता पर दबाव, मेट्रो जैसे बेहतर शहरी गतिशीलता नेटवर्क के कारण प्रमुख शहरी भूमि क्षेत्रों के बढ़ते मूल्य, निर्माण की बढ़ती लागत, राज्य पर बड़े वित्तीय बोझ के साथ गुणवत्ता वाले आवास मुफ्त में उपलब्ध कराने में कठिनाई के कारण तमिलनाडु बोर्ड शहरी गरीबों के लिए आवास के प्रावधान की बढ़ती मांग और इन घरों के लिए मूल्यवान आंतरिक शहर भूमि क्षेत्रों के उपयोग के बीच संतुलन बनाने की स्थिति है।.

मामले का अध्ययन:-

हमने भारत में ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, जिनमें ऐसे मॉडल आगे बढ़े हैं और काफी परिपक्व हो चुके हैं, ताकि वर्तमान पुनर्विकास प्रस्ताव पर काम करने से पहले कुछ सबक सीखे जा सकें। मुंबई से शुरू होकर दिल्ली और अहमदाबाद जैसे अन्य शहरों में फैले दो दशकों के प्रयोग से मिले सबक, इन सकारात्मक प्रयासों में से प्रत्येक के पक्ष और विपक्ष को उजागर करते हैं, जो बड़े पैमाने पर शहरों को बदलने के लिए किए गए हैं, जिससे नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता बेहतर हुई है, क्योंकि वे शहरी गरीबों के आवास स्टॉक में वृद्धि करते रहे हैं।

मुंबई में "स्लम रिहैबिलिटेशन अथॉरिटी (एसआरए)" का गठन एकल सुविधा प्रदानकर्ता एजेंसी के रूप में किया गया था, जिसमें अनुमोदन, विनियमन और अर्ध-न्यायिक मध्यस्थ के रूप में कार्य करने के लिए शक्तिशाली वित्तीय और प्रशासनिक नियंत्रण थे। इसके बाद, सरकारी वित्तीय योगदान को निष्प्रभावी करने के उद्देश्य से, पीपीपी मॉडल को अपनाया गया और इस तरह से प्रोत्साहन दिया गया कि झुग्गीवासियों ने सोसायटी बनाकर पुनर्विकास की प्रक्रिया शुरू की और डेवलपर्स की पहचान की, जिन्होंने निवासियों से 70% सहमति प्राप्त करने के बाद, 3 से 4 की अधिकतम एफएसआई के साथ एसआरए को पुनर्विकास प्रस्ताव प्रस्तुत किया। झुग्गी पुनर्वास घटक (न्यूनतम 25 वर्गमीटर/इकाई) और मुक्त बिक्री घटक के लिए निर्मित क्षेत्र का अनुपात शहर, उपनगर और धारावी के रूप में वर्गीकृत स्थानों के आधार पर निर्दिष्ट किया गया था। इसके अलावा, वाणिज्यिक और सामुदायिक सुविधाओं की अनुमति दी गई। सरकार द्वारा निर्धारित संपत्ति मूल्य का 25% प्रीमियम डेवलपर द्वारा भुगतान किया जाना था। लाभार्थियों के लिए लॉक-इन अवधि 10 वर्ष थी। एसआरए वेबसाइट पर आज इस मॉडल के तहत विकसित की जा रही 1400 से अधिक परियोजनाओं की सूची दी गई है।

2015 में नवी मुंबई क्षेत्र में सिडको ने निर्दिष्ट भौगोलिक सीमाओं के अंतर्गत सिडको द्वारा निर्मित इमारतों के पुनर्निर्माण और पुनर्विकास के लिए 3.0 के एफएसआई के साथ एक संशोधित शहरी नवीनीकरण योजना प्रस्तुत की, जिसमें 30 वर्ष से अधिक पुरानी इमारतें भी शामिल थीं। जब ईडब्ल्यूएस इमारतों को ध्वस्तीकरण और पुनर्निर्माण के लिए चुना गया था, तो 300 वर्ग फीट का न्यूनतम कारपेट एरिया प्रोत्साहन एफएसई के साथ निर्धारित किया गया था और डेवलपर सोसाइटियों/ सिडको के बीच शेष एफएसआई पर साझाकरण पैटर्न निर्धारित किया गया था।

दिल्ली में, माननीय प्रधानमंत्री ने 04.01.25 को दिल्ली के अशोक विहार में झुग्गी पुनर्वास परियोजना के हिस्से के रूप में 1,675 नवनिर्मित फ्लैटों का उद्घाटन किया, जिसमें उचित सुख-सुविधाओं से सुसज्जित बेहतर और रहने का स्वस्थ माहौल है। एक फ्लैट के निर्माण पर 25 लाख रुपये की राशि खर्च होती है, पात्र लाभार्थी कुल राशि का 7% से कम भुगतान करते हैं, जिसमें मामूली योगदान के रूप में 1.42 लाख रुपये और पांच साल के रखरखाव के लिए 30,000 रुपये शामिल हैं। ये घर रहने के लिए तैयार हैं। 340 वर्ग फीट के प्रत्येक फ्लैट में एक बेडरूम, लिविंग रूम, किचन, बाथरूम और बालकनी है। मकान में किचन काउंटर, स्टील सिंक, वॉशबेसिन, डब्ल्यू सी, बिजली के पॉइंट, पानी की आपूर्ति, बिजली और नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध है।

प्रस्तावित पुनर्विकास मॉडल:-

जैसा कि केस स्टडीज में रेखांकित किया गया है, यह देखा गया है कि कभी भी "एक ही तरीका सभी के लिए उपयुक्त नहीं है" और इसलिए भूमि की क्षमता और तत्काल अवधि में तेजी से बदलाव की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, कार्यान्वयन के निम्नलिखित मॉडल प्रस्तावित हैं:

मॉडल-1. तमिलनाडु बोर्ड द्वारा भूमि क्षेत्र के एक हिस्से में ईडब्ल्यूएस स्लम आवास और शेष भूमि की 99 वर्षों के लिए बिक्री/दीर्घकालिक पट्टा।

मॉडल-2. बोर्ड द्वारा मिश्रित उपयोग में सम्पूर्ण भूमि का पुनर्विकास, ईडब्ल्यूएस आवास और बिक्री/दीर्घकालिक पट्टे पर वाणिज्यिक/अन्य उपयोग।

मॉडल-3. भूमि के लिए प्रीमियम के साथ सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) और फ्रीहोल्ड आधार पर भूमि का हस्तांतरण या 99 वर्षों के लिए भूमि का दीर्घकालिक पट्टा।

हालांकि, विचार-विमर्श के बाद पीपीपी के माध्यम से "वापसी और बिक्री" मॉडल के साथ कार्यान्वयन के लिए दो विकल्प सुझाए गए हैं, जो तमिलनाडु बोर्ड के लिए वित्तीय रूप से अधिक व्यवहार्य और फायदेमंद होंगे।

विकल्प – 1

भूमि को लीजहोल्ड आधार पर पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित किया जाए

इस मामले में, पीपीपी डेवलपर मास्टर प्लान के अनुसार भूमि के चिन्हित क्षेत्र (अधिकतम घनत्व 1000 रिहायशी यूनिट/हेक्ट. तक) के भीतर निर्दिष्ट डिजाइन और विनिर्देशों के साथ-साथ सभी आवश्यक नागरिक सुविधाओं और बुनियादी ढाँचा सुविधाओं के साथ 500 या अधिक ईडब्ल्यूएस घरों का निर्माण करेगा। पूर्ण की गई इकाइयों को पहचाने गए लाभार्थियों को आवंटन के लिए पीपीपी डेवलपर द्वारा तमिलनाडु बोर्ड को निःशुल्क सौंप दिया जाएगा।

ईडब्ल्यूएस घरों के नवीनीकरण और रखरखाव के लिए पीपीपी डेवलपर द्वारा 6.70 करोड़ रुपये या उससे अधिक की संयुक्त पूंजी बनाई जाएगी और यह राशि एक सावधि जमा में जमा की जाएगी और इस राशि से होने वाली ब्याज आय का उपयोग इमारत के नवीनीकरण और रखरखाव के लिए किया जाएगा। इस फंड का संचालन रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, तमिलनाडु बोर्ड और पीपीपी डेवलपर द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

पीपीपी डेवलपर, आरडब्ल्यूए के साथ मिलकर इमारतों के दैनिक संचालन और रखरखाव के लिए जिम्मेदार होगा। आवासीय परिसर के संचालन और रखरखाव के लिए आरडब्ल्यूए के माध्यम से प्रत्येक घर से 750 रुपये का मासिक योगदान एकत्र किया जाएगा।

इसके बदले में तमिलनाडु बोर्ड शेष भूमि को 99 वर्ष पुराने स्थायी पट्टे पर नवीनीकरण खंड के आधार पर पीपीपी डेवलपर को भूमि या अतिरिक्त ईडब्ल्यूएस इकाइयों के लिए प्रीमियम के साथ हस्तांतरित करेगा। प्रीमियम/अतिरिक्त इकाइयों का निर्धारण पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी बोली के माध्यम से किया जाना है और तकनीकी रूप से योग्य पीपीपी डेवलपर जो उच्चतम भूमि प्रीमियम या अधिक संख्या में ईडब्ल्यूएस इकाइयों की पेशकश करता है, उसे परियोजना प्रदान की जाएगी। न्यूनतम अपेक्षित भूमि प्रीमियम या अतिरिक्त ईडब्ल्यूएस इकाइयाँ इस प्रकार हैं।

भूमि पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित की जाए	भूमि प्रीमियम के रूप में बोर्ड को राजस्व	बोर्ड को दी गई निःशुल्क ईडब्ल्यूएस इकाइयों की संख्या
5664 वर्गमीटर	16.60 करोड़ रु.	500 यूनिट
5264 वर्गमीटर	शून्य	540 यूनिट (40 अतिरिक्त यूनिट)

विकल्प – 2

भूमि को फ्री होल्ड आधार पर पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित किया जाए

यह मॉडल ऊपर बताए गए विकल्प-1 के समान है, अंतर केवल यह है कि शेष भूमि को फ्री होल्ड आधार पर पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित किया जाना है। यहां भी, तमिलनाडु बोर्ड यह तय कर सकता है कि क्या वह फ्री ईडब्ल्यूएस यूनिट + भूमि प्रीमियम चाहता है या फ्री होल्ड आधार पर पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित की जाने वाली भूमि के बदले में केवल ईडब्ल्यूएस यूनिट चाहता है।

भूमि पीपीपी डेवलपर को हस्तांतरित की जाए	भूमि प्रीमियम के रूप में बोर्ड को राजस्व	बोर्ड को दी गई निःशुल्क ईडब्ल्यूएस इकाइयों की संख्या
5664 वर्गमीटर	39.60 करोड़ रु.	500 यूनिट
4744 वर्गमीटर	शून्य	592 यूनिट (92 अतिरिक्त यूनिट)

उपरोक्त संभावनाएं नकदी प्रवाह और पीपीपी डेवलपर को 25% की वापसी दर के आधार पर तैयार की गई हैं।

योजना की विशेषताएँ:-

बेहतर समुदाय का निर्माण:- सभी मौजूदा आवासों को 20% अधिक क्षेत्रफल तथा बेहतर आवास एवं बुनियादी ढांचागत सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

योजना व्यवहार्यता:- पीपीपी डेवलपर को निवेश पर आकर्षक रिटर्न और पीपीपी मोड में योजना को लागू करने की गुंजाइश। लाभार्थी का कोई योगदान अपेक्षित नहीं है।

परियोजना राजस्व:- तमिलनाडु बोर्ड परियोजना राजस्व या अतिरिक्त इकाइयों का उपयोग अन्य झुग्गीवासियों के पुनर्वास के लिए कर सकता है, जो अनुपयोगी भूमि और असुरक्षित क्षेत्रों में रह रहे हैं।

अनुकरण की गुंजाइश:- हरित प्रौद्योगिकी और सर्वोत्तम प्रथाओं के उपयोग के साथ विकास मॉडल और वित्तीय मॉडल को देश में कहीं भी दोहराया जा सकता है।

सफलता शुल्क मॉडल:- हडको ने परियोजना के लिए सफलता शुल्क मॉडल पर परियोजना प्रबंधन सलाहकार के रूप में काम करने की पेशकश की थी। एक वित्तीय संस्थान के रूप में, हडको किसी भी फंड की आवश्यकता के लिए परियोजना को फंड भी दे सकता है।

आत्मनिर्भर मॉडल:- परियोजना के कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकार के धन की आवश्यकता नहीं है, केवल पीएमएवाई-2.0 के तहत प्रति लाभार्थी 1.00 लाख रुपये का अनिवार्य राज्य अंशदान आवश्यक है।

पीएमएवाई शहरी मिशन को सुगम बनाने में हडको की भूमिका

पी सुब्रमणियन

वर्ष 2022 तक शहरी आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, कम आय वर्ग और मध्यम आय वर्ग के लाभार्थियों (जिनके पास अपना मकान नहीं है), को आवास उपलब्ध कराने के लिए जून 2015 में "प्रधानमंत्री आवास योजना – सबके लिए आवास" मिशन शुरू किया गया था। मिशन ने निम्नलिखित चार श्रेणियों के माध्यम से सभी पात्र लाभार्थियों को केंद्रीय सहायता प्रदान की:

- **लाभार्थी-आधारित व्यक्तिगत आवास निर्माण या विस्तार (बीएलसी):** ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लाभार्थियों, जिनके पास भूमि है, को 1.5 लाख रुपये की केंद्रीय सहायता
- **सार्वजनिक या निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी में किफायती आवास (एएचपी):** ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लाभार्थियों, जिनके पास जमीन नहीं है, को 1.5 लाख रुपये की केंद्रीय सहायता
- **"स्व-स्थान" स्लम पुनर्विकास (आईएसएसआर):** उसी जगह पर स्लम के पुनर्विकास के लिए प्रति मकान ₹1 लाख
- **क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम (सीएलएसएस):** बैंकों से लिए गए आवास ऋणों पर ब्याज सब्सिडी (ईडब्ल्यूएस और एलआईजी के लिए 6.5%, एमआईजी I के लिए 4% और एमआईजी II के लिए 3%, अधिकतम 2.67 लाख रुपये तक)

31.03.2022 तक स्वीकृत आवासों को पूरा करने के लिए मिशन अवधि को 31.12.2025 तक बढ़ा दिया गया है।

1 सितंबर, 2024 को पीएमएवाई-शहरी 2.0 मिशन शुरू किया गया है जिसका लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में एक करोड़ और मकानों को लाभ पहुंचाना है। पीएमएवाई 2 के प्रमुख पहलू नीचे दिए गए हैं:

- बीएलसी और एएचपी के अंतर्गत प्रति लाभार्थी ₹2.5 लाख की केंद्रीय सहायता। इसके अतिरिक्त, ₹1,000/वर्ग मीटर का प्रौद्योगिकी नवाचार अनुदान (टीआईजी) भी प्रदान किया जाता है।
- शहरी प्रवासियों/गरीबों को उनके कार्यस्थल के पास किफायती दरों पर अच्छे किराये के आवास उपलब्ध कराने हेतु किफायती किराये के आवास
- ब्याज सब्सिडी योजनाएँ (₹25 लाख तक के आवास ऋण के पहले ₹8 लाख पर केवल 4% सब्सिडी, ≤₹9 लाख से कम आय वाले परिवारों तक सीमित, अधिकतम ₹1.8 लाख की सब्सिडी के साथ).

> जुलाई 2025 तक मिशन ने 2.01 लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय अनुदान सहायता के साथ 4926 शहरों में 1.19 करोड़ मकानों के प्रस्तावों को मंजूरी दी

हडको की भूमिका

- पीएमएवाई प्रस्तावों की मंजूरी के लिए केंद्रीय मंजूरी और निगरानी समिति (सीएसएमसी) को सुविधा प्रदान करने वाली परियोजनाओं की कागज़ी और परियोजना स्थलों की जांच का कार्य
- पीएमएवाई मिशन के अंतर्गत योजनाओं के लिए राज्य स्तरीय नोडल एजेंसियों को व्यावहारिक वित्तपोषण अंतराल की ऋण सहायता
- केंद्रीय नोडल एजेंसी (सीएनए) प्रमुख ऋणदाता संस्थानों के माध्यम से लाभार्थियों तक सीएलएसएस सब्सिडी पहुंचाएगी और योजना की प्रगति की निगरानी करेगी।
- राज्य स्तरीय नोडल एजेंसियों के सलाहकार के रूप में हडको ने सबके लिए मकान योजना की कार्य योजना रिपोर्ट और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की, जिससे राज्य सरकारों को पीएमएवाई मिशन के कार्यान्वयन में सुविधा प्राप्त हुई।
- प्रमुख ऋण प्रदाता संस्था के रूप में अपनी रिटेल वित्त सुविधा के माध्यम से व्यक्तियों को ऋण प्रदान करना
- केंद्रीय/राज्य/यूएलबी/बैंक अधिकारियों का क्षमता निर्माण और पीएमएवाई मिशन कार्यक्रम का प्रचार/प्रसार।.

कर्नाटक सरकार के राजीव गांधी हाउसिंग कार्पोराशन के सलाहकार के रूप में हडको ने कर्नाटक राज्य के 61 शहरों की सबके लिए मकान योजना की कार्य योजना रिपोर्ट तैयार की है :

- परियोजना स्थल के निरीक्षण और घरेलू सर्वेक्षण के माध्यम से मांग सर्वेक्षण डेटा को मान्य किया गया।
- स्लम बस्तियों को रहने योग्य और न रहने योग्य के रूप में वर्गीकृत करने के लिए बसाव योग्यता विश्लेषण किया गया।
- बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं में कमियों का आकलन किया गया।
- झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले गरीबों से बातचीत करके उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पर्याप्त आवास के लिए उनकी प्राथमिकताओं एवं प्राथमिकताओं का आकलन किया गया।
- रहने योग्य झुग्गियों के लिए उसी स्थान पर स्लम पुनर्वास (आईएसएसआर) योजना तैयार की गई। आईएसएसआर को व्यवहारिक बनाने के लिए अतिरिक्त एफएआर/एफएसआई, टीडीआर अधिकारों जैसे प्रोत्साहनों की खोज की गई। न रहने योग्य झुग्गियों में रहने वाले लोगों के लिए वार्षिक योजनाओं के साथ पुनर्वास योजनाएँ तैयार की गईं।
- मकान की स्थिति और बुनियादी ढाँचे की स्थिति के आकलन के लिए गैर-झुग्गी शहरी गरीब स्थानों का क्षेत्रीय दौरा किया गया ।
- गैर-झुग्गीवासी शहरी गरीब के लिए आवास की माँग का आकलन किया गया और उन्हें उनकी आर्थिक स्थिति और भूमि स्वामित्व के आधार पर एएचपी, बीएलसी और सीएलएसएस के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया।
- सेवा स्तर के पैमाने की तुलना में उपलब्ध बुनियादी ढाँचागत सुविधाओं की स्थिति का आकलन किया गया।
- राज्य सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों और अन्य माध्यमों से उपलब्ध निधियों के संयोजन के विकल्पों पर विचार किया गया। वार्षिक कार्य योजनाओं के साथ योजनाएँ तैयार की गईं।

परियोजना स्थल का दौरा और लाभार्थियों के साथ बैठकें

(इस कार्यभार में प्रमुख अधिकारी स्वर्गीय संगीता मानव को श्रद्धांजलि)

- राजनीतिक प्रतिनिधियों, शहरी स्थानीय निकायों के अधिकारियों, आवास एवं बुनियादी ढांचे के लिए जिम्मेदार राज्य एजेंसियों, नियामक प्राधिकरणों, बैंकों/एचएफआई, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, इच्छित लाभार्थियों और आम जनता के साथ बैठकें आयोजित की गईं और सबके लिए मकान की कार्य योजना और वार्षिक कार्यान्वयन योजनाओं के मसौदे पर चर्चा की गई।
- लाभार्थियों से साथ हुई बैठकों में एकत्रित जानकारी और परियोजना स्थल के दौरों में किए गए आकलन को पर्याप्त रूप से ध्यान में रखकर एचएफएपीओए रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया।

हडको ने यह कार्य 6 महीने में पूरा किया और 1.72 करोड़ रुपये का परामर्श शुल्क प्राप्त किया

महिला दिवस

जी नागराजन

महिलाओं के बिना....
इस धरती पर कोई मनुष्य होता कैसे ?
प्यार, स्नेह, दोस्ती और प्रेम
इन सबका स्रोत महिलाएँ ही तो हैं !
महिला दिवस
सिर्फ़ महिलाओं का दिवस नहीं,
बल्कि महिलाओं के गर्भ से जन्म लेने वाले सभी प्रत्येक मनुष्यों का दिन है
प्यार के लिए माँ,
स्नेह के लिए बहन
दोस्ती के लिए बहन
और प्रेम के लिए पत्नी !
इंसान को एक इंसान की तरह जीने के लिए,
प्यार, स्नेह, दोस्ती और प्रेम
ये सब ज़रूरी हैं
और इन सबके लिए महिलाएँ ज़रूरी है
जब पुरुष महिलाओं की महानता को भूल जाएगा,
तो ईष्ट दुनिया को नष्ट कर देंगे
इसलिए हम सुख पूर्वक रहने के लिए
अपने वंशजों के साथ रहते हैं
आइए महिलाओं की रक्षा करें, सम्मान करें
जब तक हम जीवित हैं, उनका समर्थन करते रहें

மகளீர் இல்லையெனில்
இப்பூவுலகில் மனிதர்களே இல்லை
அன்பு பாசம் நேசம் காதல்
இவை அனைத்திற்கும் மூலாதாரம் மகளீர்
மகளிர் தினம்
மகளிருக்கான தினம் மட்டும் அல்ல
மகளிரின் கர்ப்பத்தில்
உதித்த அனைவருக்குமான தினம்
அன்புக்கு அன்னை
பாசத்திற்கு அக்காள்
நேசத்திற்கு தங்கை
காதலுக்கு மனைவி
மனிதன் மனிதனாய் வாழ
அன்பு பாசம் நேசம் காதல்
இவை அனைத்தும் தேவை
இவை அனைத்திற்கும் மகளீர் தேவை
மகளீரின் மகத்துவத்தை மனிதன் மறக்கும் போது
பூமாதேவி இப்பூவுலகை அழித்து விடுவாள்
ஆகையால் நாம் வாழ நம் சந்ததியினர் நலமுடன் வாழ
மகளீரை பாதுகாப்போம் போற்றுவோம்
வாழும் வரை துணை நிற்போம்

अरुलमिघु मारियम्मन मंदिर समयपुरम के लिए कतार परिसर का विकास

दीना ए पी

परियोजना:

हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती (एचआर एंड सीई) विभाग, तिरुचिरापल्ली डिवीजन (ग्राहक) और मारियम्मन मंदिर, समयपुरम के संयुक्त आयुक्त ने हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कार्पोराशन लिमिटेड (हडको) को तिरुचिरापल्ली जिले के समयपुरम में मारियम्मन मंदिर के लिए आवश्यक तीर्थयात्रियों की सुविधाओं की पहचान करने और क्यू कॉम्प्लेक्स का अध्ययन और डिजाइन करने का काम सौंपा गया है। समयपुरम मारियम्मन मंदिर, समयपुरम शहर में स्थित है । यह राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-45) पर तिरुचिरापल्ली (तिरुचि) से लगभग 10 किलोमीटर पहले है। एक बहुत शक्तिशाली देवता के रूप में पहचाने जाने के कारण, यह राज्य के दूर-दूर से हजारों लोगों को आकर्षित करता है।

वर्तमान स्थिति:

मंदिर प्राधिकरण/देवस्थानम ने एक मास्टर प्लान कॉम्प्लेक्स विकसित किया है, जहाँ तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाएँ विकसित करने की योजना है। शौचालय, टॉन्सर हॉल और अन्नदान हॉल जैसी सुविधाएँ पहले ही विकसित की जा चुकी हैं। वर्तमान में कतार प्रणाली को समायोजित करने के लिए अस्थायी सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही है, लेकिन ये अस्थायी व्यवस्थाएँ हैं और इन्हें अवसर एवं भीड़ की आवाजाही के अनुसार लगातार पुनर्व्यवस्थित करना पड़ता है। सामान्य आंतरिक प्रबंधन प्रणाली अच्छी तरह से प्रबंधित है और कतार में भक्तों की सुव्यवस्थितता और अच्छे दर्शन प्रदान करने के उपायों को इस प्रकार सुनिश्चित किया गया है:

(1) दर्शन तक अलग-अलग कतार प्रणाली बनाए रखना; और

(2) लगभग 3 सेकंड का औसत दर्शन समय प्रदान करना।

वर्तमान सुविधाओं से जुड़ी कमियाँ:

इसलिए मौजूदा सुविधा से जुड़ी प्रमुख कमियों की पहचान की गई है ताकि नए डिजाइन में इन समस्याओं को दूर किया जा सके।

- तीर्थयात्रियों को पूरे प्रतीक्षा समय के लिए एक ही तरह से कतार में खड़े रहने के लिए मजबूर किया जाता है और बैठने की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है।
- व्यस्त समय के दौरान कतार में बहुत भीड़ होती है और कोई भी चलने-फिरने की जगह नहीं होती है, जिसके कारण सभी तीर्थयात्रियों को घुटन महसूस होती है।
- कतार में रहते हुए स्वच्छता सुविधाओं और पीने के पानी तक की कमी है।

  चिकित्सा या अन्य आपात स्थितियों के मामले में आपातकालीन निकास की कमी है।

विकास के लिए रणनीति:

आम तौर पर किसी भी कतार प्रणाली को भक्तों के लिए बैठने की अंतहीन पंक्तियों के साथ एक खुले हॉल के रूप में देखा जाता है। यहाँ एकरसता को तोड़ने के लिए कई जगहें "होल्डिंग स्पेस/क्षेत्र" बनाए गए हैं जो लोगों को आपस में जुड़े हुए स्थानों की एक श्रृंखला में रख सकते हैं। इन होल्डिंग स्थानों को सभी सार्वजनिक सुविधाओं के साथ प्रदान किया जा सकता है और यह सामान्यतः तीर्थयात्रियों के चलने के पथ के साथ स्थित होना चाहिए। प्रस्तावित स्थान प्रवेश मंडप, कतार ब्लॉक, प्रतीक्षालय, कनेक्टिंग गलियारे हैं जो सभी सुविधाओं जैसे शौचालय, पीने के पानी और यहां तक कि अनौपचारिक खरीदारी के लिए शॉपिंग कियोस्क के प्रावधान के साथ जीवंत वातावरण के साथ बनाए गए हैं।

प्रस्तावित समग्र विकास का दृश्य

स्मृति के झरोखे से

नरेन्द्र कुमार

क़ागज़ पर लिखे "ठंडी बयार" शब्दों को पढ़ने और खुले में अपने गालों से टकराती मस्त पवन के झोंको के अनुभव में ख़ासा फर्क होता है। बारिश की पहली बूंदों के ज़मीन पर पड़ने से उठी मिट्टी की सौंधी महक, शब्दों में महसूस नहीं की जा सकती। समुद्र से उठने वाली लहरों को बिना देखे प्राकृतिक सौंदर्य के नज़ारे को कैसे अपनी आँखों में भरा जा सकता है। मंदिर में बिना प्रवेश के दीप शिखा के दिव्य दर्शन से मिलने वाले आत्मिक आनंद को सुनकर तो महसूस नहीं किया जा सकता।

कुछ ऐसा ही अनुभव दक्षिण भारत के कारोबारी शहर चेन्नै में रहकर चेन्नै के विषय में विगत एक वर्ष में हुआ। मानव महासमुद्र की संज्ञा से सुशोभित भारत का प्रत्येक भू-भाग अपनी कतिपय विशिष्टताएँ लिए हुए है। किन्तु एक उत्तर भारतवासी के दक्षिण भारत में आकर, यहाँ बसकर, यहाँ की संस्कृति को जी-कर महसूस करना अपने आप में कम रोमांचकारी नहीं। भाषा में फर्क, मौसम में अंतर, खान-पान में विविधता और पूजा-अर्चना पद्धति में भिन्नता, स्पष्ट तौर पर उत्तर भारत के अन्य राज्यों से अलग है। यहाँ बात किसी भाषा, खानपान या पूजा अर्चना पद्धति के किसी से श्रेष्ठ होने या उत्तम होने से नहीं, अपितु अंतर, विशुद्ध अंतर के रूप में ही है।

दक्षिण भारत की अर्वाचीन पूजा-अर्चना पद्धति का कोई सानी नहीं। शायद उत्तर भारत पूरे वर्ष इतने नारियल इस्तेमाल न करता होगा जितने यहाँ किसी भी मंगल त्योहार पर ईश्वर को समर्पित कर फोड़े जाते हैं। मंगलाचार के बीच देव-देवी स्नान पद्धति, उत्तर भारत से कहीं अधिक लंबी और भिन्न है। मंदिरों के गोपुरम, मंडपम और वास्तुकारी कला-कौशल, निश्चित रूप से अपनी सौंदर्यपूर्ण भिन्नता लिए हुए हैं। ईश दर्शन से पूर्व उनके वाहन दर्शन, निश्चित तौर पर ईश-परिचय के स्पष्ट द्योतक हैं। दक्षिण भारतीय भाषायों के संस्कृत भाषा से अधिक सान्निध्य में होने के कारण मंत्रोचार में शब्दों के सही उच्चारण की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। इन भिन्नतायों से किसी धर्म विशेष या पूजा-अर्चना पद्धति विशेष के किसी अन्य धर्म विशेष या पूजा-अर्चना पद्धति विशेष से उत्कृष्ट होने का प्रश्न नहीं, मंतव्य केवल भिन्नता को समझना और समझाना है।

नारियल के बहुतायत में होने के कारण भोजन एवं मिठाइयों में इसके अनेक प्रयोग देखने को मिलते हैं। चावल पैदावार की अधिकता के लोगों का मूल भोजन चावल और चावल से बने पदार्थ है। गेहूं एवं अन्य अनाज तुलनात्मक रूप में काफी कम प्रयोग में लाए जाते है। मौसम के अनुकूल होने के कारण दक्षिण भारत में गरम मसाले प्राकृतिक रूप सहज सुलभ है और इसीलिए इनका भोजन में भी खुलकर प्रयोग होता है। गन्ने की अधिक उपज के कारण गुड, तिल और मूँगफली से बनी अनेक मिठाइयाँ सहज उपलब्ध है। आचार बनाने का अलग तरीका, भोजन के साथ तली हुए मिर्च एवं पापड़ विशेष रूप से परोसे जाते है। बिसीबिली भात भोजन में अवश्य परोसे जाने की परंपरा है। समुद्र के किनारे बसे होने से कारण मछली और अन्य समुद्री जीवों का भी भोजन के तौर पर प्रयोग किया जाता है। इन सबसे भिन्न केले के पत्ते पर सम्मान से परोसने से पूर्व पत्ते को धोने और भोजन ग्रहण के उपरांत सम्मान में पत्ते को अपनी ओर लपेटने की परंपरा निश्चित तौर पर प्रशंसनीय है।

परिधान और वेशभूषा में उत्तर भारत से कोई अधिक अंतर नहीं केवल वैवाहिक परिधान और मंदिरों में प्रवेश के समय वेष्टि, धोती या लुंगी की अनिवार्यता है। ब्राह्मण वर्ग केवल वेष्टि परिधान में ही पूजा-अर्चना करते है। सोने-चाँदी के स्थानीय डिजाइन के मंगलसूत्र, चूड़ियाँ, गले के हार और स्थानीय कारीगारों के साथ-साथ अनेक भारतव्यापी नामचीन ब्रांड के सोने-चांदी के सभी विक्रेताओं के छोटे-बड़े शोरूम बहुतायत में उपलब्ध हैं।

यदि भाषा की बात की जाए तो स्थानीय तमिल भाषा का प्रयोग किया जाता है। भाषा में व्याप्त संस्कृत शब्दावली का नैसर्गिक प्रयोग देखने को मिलता है। तेलुगु, कन्नड एवं मलयालम की जानकारी होने पर भी आप आसानी से अपनी बात दूसरे को समझा सकते हैं अथवा उससे वार्तालाप कर सकते हैं। स्थानीय कामकाजी समाज अपनी कारोबारी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए हिंदी एवं अंग्रेजी का भी प्रयोग करते है। जितना भाषा विरोध सुनने को मिलता है उतना देखने को नहीं। देशभर के अन्य भागों, विशेषकर गुजरात, राजस्थान एवं बिहार से स्थायी रूप से आकार बसे अन्य भाषा-भाषी भी बहुतायत में देखने को मिलते हैं।.

सम्पूर्ण दक्षिण भारत देवालयों से अटा पड़ा है। शायद मुगल आक्रांतायों की पहुँच न होने के कारण देवालय सम्पदा दक्षिण भारत में अब भी सुरक्षित है। तमिलनाडु के चेन्नई शहर की बात करें तो कपालेश्वर

मंदिर, पार्थसारथी मंदिर, टीटीडीसी देवस्थानम मंदिर, पद्मावती मंदिर, आंजनेय मंदिर और अष्टलक्ष्मी मंदिर शहर में ही स्थित हैं। विश्व-विखात तिरुपति मंदिर और मदुरै का मीनाक्षी मंदिर अपनी आस्था के लिए जाना जाता है। कांचीपुरम तो मंदिरों की ही नगरी है। विष्णु मंदिर और शिव मंदिर श्रृंखला अपने आप में अद्भुत हैं।

इन सबके बीच सब-अर्बन ट्रेन, मेट्रो ट्रेन, परंपरागत भारतीय रेल और अंतर राष्ट्रीय हवाई सेवा और हवाई अड्डे पर उतारने से पूर्व समुद्र की लहरों के ऊपर भ्रमण करता हवाई जहाज अपने आप में चेन्नई को यादगार शहर बनाने के लिए पर्याप्त है।

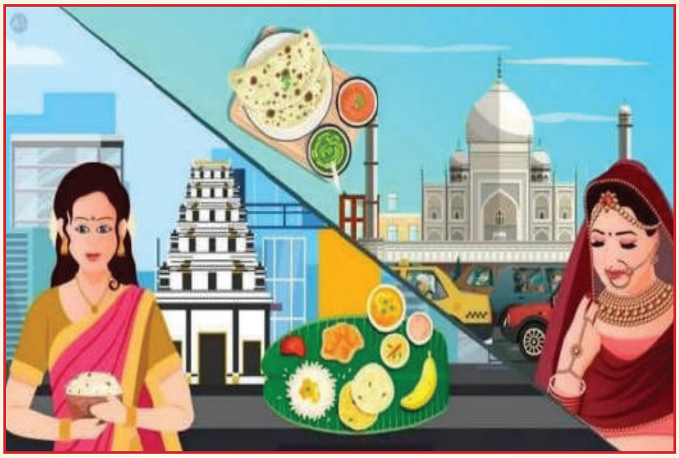

Climate in North India

Climate in South India

कारपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) में चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय का योगदान

आर अंबू
संयुक्त महाप्रबंधक (परि.)

वित्त वर्ष 2025 के दौरान, सीएसआर पहल के हिस्से के रूप में हडको ने तमिलनाडु के तीन जिलों अर्थात कृष्णगिरी, विरुदनगर एवं रामनाथपुरम को लाभान्वित करते हुए सात सरकारी स्कूलों में फर्नीचर सामान (कक्षा के चार सीट वाले टेबल/डेस्क एवं बेंच, कुल 200) की स्थापना के लिए 23.94 लाख रुपए की वित्तीय सहायता उपलब्ध कारवाई है । इन फर्नीचर सामानों से छात्रों के लिए बैठने, स्कूल बैग को रखने तथा लिखने की समुचित व्यवस्था हो सकेगी। हडको की इस सीएसआर पहल से 800 स्कूली छात्र-छात्राओं को लाभ मिलेगा।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं को पढ़ने का आरामदायक, सुरक्षित एवं बेहतर शिक्षण माहौल उपलब्ध करवाना है, ताकि चयन किए गए सरकारी स्कूलों में उपलब्ध करवाए गए फर्नीचर सामान से छात्रों के सही ढंग से बैठने की व्यवस्था हो सके और वे शिक्षण पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर सकें । इससे स्कूल छोडने वाले छात्रों की संख्या में भी कमीं आएगी। इस पहल से हडको को भारत सरकार के विकसित भारत के लक्ष्य के अनुरूप सरकारी स्कूलों में हडको की सीएसआर सहायता पहुंचाने का अवसर भी मिला है।

हडको ने तमिलनाडु के दो आकांक्षी जिलों सहित 6 जिलों, धर्मपुरी, रानीपेट, तिरुपथुर, वेल्लोर, रामनाथपुरम और विरुधुनगर के 18 सरकारी स्कूलों में यूवी फिल्टरेशन (अंतर्निहित) के साथ पेयजल कूलर लगाने के लिए 9,80,910/- रुपये का कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) अनुदान प्रदान किया है। स्थापना कार्य पूरा हो गया है। इस परियोजना में कुल 4674 छात्र (2310 लड़के और 2364 लड़कियाँ) को लाभ मिलेगा।

हडको की सीएसआर पहल

आर अंबू

हडको की सीएसआर पहल के हिस्से के रूप में, क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) और जिला प्रशासन एवं जिला दिव्यांग कल्याण कार्यालय, नीलगिरी जिला, तमिलनाडु के सहयोग से जिला दिव्यांग कल्याण कार्यालय में बॉटनिकल गार्डन रोड, उधगमंडलम में 18/10/2024 को एक वितरण शिविर का आयोजन किया।

शिविर कई लोगों के लिए आशा की किरण था, जिसमें 119 लाभार्थियों को 13.76 लाख रुपये के कुल 232 सहायक उपकरण वितरित करते हुए विशेष रूप से विकलांग व्यक्तियों को सशक्त बनाया गया और उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई। हडको की सीएसआर पहल के तहत 21 व्हील चेयर, 7 ट्राइसाइकिल, 62 बैसाखी, 1 रोलेटर, 2 सीपी चेयर, 1 ब्रेल स्लेट, 1 ब्रेल किट, 12 सुगम्य केन, 80 बीटीई हियरिंग एड और 16 प्रोथेसिस और अन्य उपकरण वितरित किए गए।

श्रीमति सबिता बोजान, स्वतंत्र निदेशक, हडको, श्री एस सतीश, राजस्व मंडल अधिकारी, उधगमंडलम, श्री डी कुप्पूराज, जिला दिव्यांग अधिकारी, उधगमंडलम, श्री वी टी सुब्रमण्यन कार्यकारी निदेशक, हडको, चेन्नई, श्री आर अंबू, संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना-सीएसआर), हडको, चेन्नई, श्री ए शिवकुमार, उप प्रबंधक और एलिम्को के अधिकारियों की टीम ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और विशेष रूप से सक्षम व्यक्तियों को सहायक उपकरण वितरित किए।

हडको की सीएसआर पहल

हडको की सीएसआर पहल के हिस्से के रूप में हडको क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (ALIMCO), जिला प्रशासन, जिला दिव्यांग कल्याण अधिकारी एवं स्कूल शिक्षा विभाग, कोयंबटूर जिला, तमिलनाडु के सहयोग से स्टार स्पेशल स्कूल, सिंगनल्लूर, कोयंबटूर में 24/09/2024 को सामग्री वितरण शिविर का आयोजन किया।

यह शिविर अनेक लोगों के लिए आशा की किरण था। शिविर में विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों को सशक्त बनाते हुए और उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार लाते हुए 66 बच्चों को कुल 5.38 लाख रु. के 102 सहायक उपकरण वितरित किये गये। हडको की सीएसआर पहल के अंतर्गत 14 व्हील चेयर, 3 ट्राइसाइकिल, 10 बैसाखी, 9 रोलेटर, 11 सीपी कुर्सियां, 6 ब्रेल स्लेट, 1 ब्रेल छड़ी, 5 ब्रेल किट, 1 सुगम्य छड़ी, 28 बीटीई श्रवण यंत्र और 14 प्रोथेसिस एवं कैलिपर्स वितरित किए गए।

श्रीमती सबिता बोजान, स्वतंत्र निदेशक, हडको, तिरु चंद्र मोहन, जिला दिव्यांग कल्याण अधिकारी, कोयंबटूर, श्री वी टी सुब्रमण्यम कार्यकारी निदेशक, हडको, चेन्नई, श्री आर अंबू, जेजीएम (प्रोजेक्ट्स-सीएसआर), हडको, चेन्नई, श्री ऋषभ मेहरोत्रा, जूनियर प्रबंधक एलिम्को एवं एलिम्को के अधिकारियों की टीम ने इस कार्यक्रम में भाग लिया एवं विशेष रूप से सक्षम बच्चों को सहायक उपकरण वितरित किए।

हिन्दी पखवाडा 2024

राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं मुख्यालय के निर्देशानुसार, चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय में 14 सितंबर से 29 सितंबर 2024 तक "हिंदी पखवाड़ा" मनाया गया। इस अवधि के दौरान चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय में, अनेक राजभाषा कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ और अन्य राजभाषा प्रेरक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में पुडुचेरी विकास कार्यालय और विजयवाड़ा/ तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय कार्यालयों ने भी भाग लिया। पुडुचेरी विकास कार्यालय ने प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया।

उद्घाटन समारोह 19.09.2024 को आयोजित किया गया। 20.09.2024 को आयोजित कार्यशाला में उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने "परिचयात्मक हिंदी" विषय पर एक पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया और सभी कार्मिकों को व्यावहारिक हिन्दी से अवगत करवाया गया। इस कार्यशाला का लिंक पुडुचेरी विकास कार्यालय सहित "ग" क्षेत्र के सभी कार्यालयों के साथ भी साझा किया गया। कार्यशाला समाप्ति के बाद हिंदी कहानी वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

"संघ सरकार की राजभाषा नीति" विषय पर एक अन्य कार्यशाला का आयोजन 24.09.2024 को किया गया। कार्यशाला में संघ सरकार की राजभाषा नीति, नियमों एवं संवैधानिक प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला के उपरांत दो प्रतियोगिताओं (विलोम शब्द/शब्द ज्ञान तथा हिंदी शब्द लेखन) का आयोजन भी किया गया|

26.09.2024 को कार्यालय में "बूझो तो जाने" तथा गायन प्रतियोगिता नामक दो समूह प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यालय के सभी अधिकारियों ने उत्साह के साथ इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया|

हिंदी पखवाड़ा के दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक-हडको ने 27.09.2024 को चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका "संगम" के दूसरे संस्करण का मुख्यालय से ऑनलाइन विमोचन भी किया। इस अवसर पर मुख्यालय में निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) और कार्यकारी निदेशक (राजभाषा) भी उपस्थित थे। पत्रिका का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक-हडको ने पत्रिका का अवलोकन भी किया और अपने राजभाषा दायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने के लिए कार्यकारी निदेशक-चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय की सराहना की गई।

27.09.2024 को हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया और क्षेत्रीय प्रमुख/कार्यकारी निदेशक - चेन्नई की ओर से प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर कार्यालय में राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति के लिए शपथ ली गई। अंत में कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हिन्दी नोडल अधिकारी की ओर से सभी को धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।

उद्घाटन समारोह

कार्यशाला और हिंदी कहानी वाचन (व्यक्तिगत) प्रतियोगिता

कार्यशाला और विलोम शब्द/शब्द ज्ञान (व्यक्तिगत) प्रतियोगिता

समूह प्रतियोगिता

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक और समापन

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा पत्रिका का ऑनलाइन विमोचन

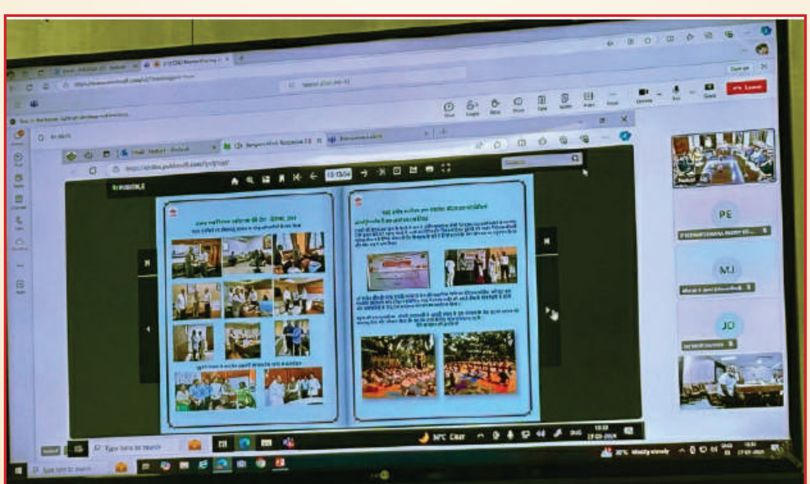

हडको की सीएसआर पहल

हडको की सीएसआर पहल के हिस्से के रूप में, क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) और जिला प्रशासन एवं जिला दिव्यांग कल्याण कार्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु के सहयोग से राज्य संसाधन सह प्रशिक्षण केंद्र, सरकारी पेरिफेरल अस्पताल परिसर, के.के. नगर, दक्षिण चेन्नई में 19/11/2024 को एक वितरण शिविर का आयोजन किया।

यह शिविर अनेक लोगों के लिए आशा की किरण था। शिविर में विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों को सशक्त बनाते हुए और उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार लाते हुए 202 बच्चों को कुल 28.36 लाख रु. के 394 सहायक उपकरण वितरित किये गये। हडको की सीएसआर पहल के तहत 10 व्हील चेयर, 17 मोटरयुक्त तिपहिया साइकिल, 10 मोटरयुक्त व्हील चेयर, 36 बैसाखी, 9 सीपी व्हील चेयर, 14 ब्रेल किट, 16 सुगम्य केन, 2 स्मार्ट फोन, 260 बीटीई हियरिंग एड और 20 प्रोथेसिस और कैलिपर्स वितरित किए गए।.

श्रीमती सबिता बोजान, स्वतंत्र निदेशक - हडको, श्री ए.एम. वी प्रभाकर राजा, विधान सभा सदस्य (विरुगंबाक्कम), श्री एम. कृष्णमूर्ति, आंचलिक समिति अध्यक्ष, श्री एस. कुमार, जिला दिव्यांग कल्याण अधिकारी - चेन्नई, श्री वी टी सुब्रमण्यम, कार्यकारी निदेशक, हडको - चेन्नई, श्री आर. अंबू, संयुक्त महाप्रबंधक (परि-सी.एस.आर), हडको - चेन्नई, श्री पी.वी. सैमसन, प्रबंधक (पीडी एंड एमएम), श्री ऋषभ मेहरोत्रा, कनिष्ठ प्रबंधक (एमआर) और एलिम्को के अधिकारियों की टीम ने कार्यक्रम में भाग लिया और विशेष रूप से विकलांग बच्चों को सहायक उपकरण वितरित किए।.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 का पालन

सीआरओ के कर्मचारियों द्वारा सत्यनिष्ठा की शपथ

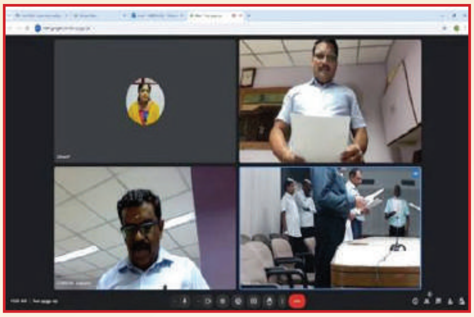

व्याख्यान

ऑनलाइन ग्राहक बैठक – हडको निवास

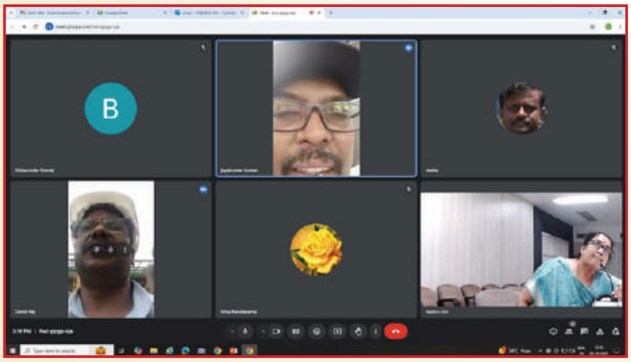
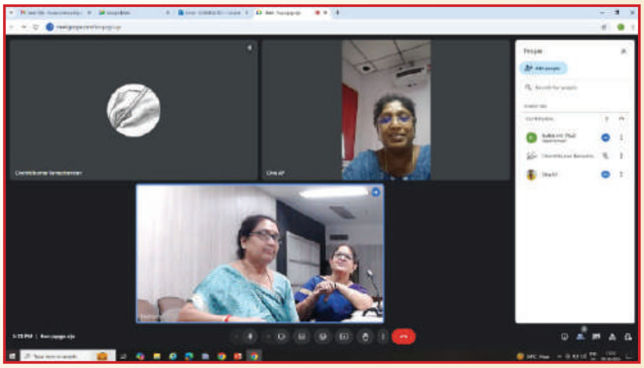

प्रतियोगिता - चेन्नई आरओ, पुडुचेरी विकास कार्यालय

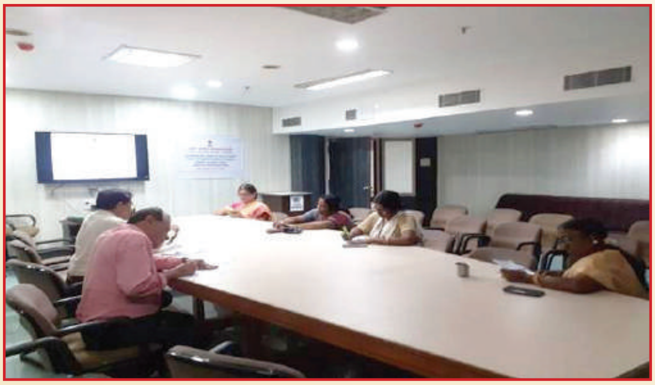

चित्रकला प्रतियोगिता - विजेता प्रविष्टियाँ - चेन्नई आरओ कर्मचारियों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत

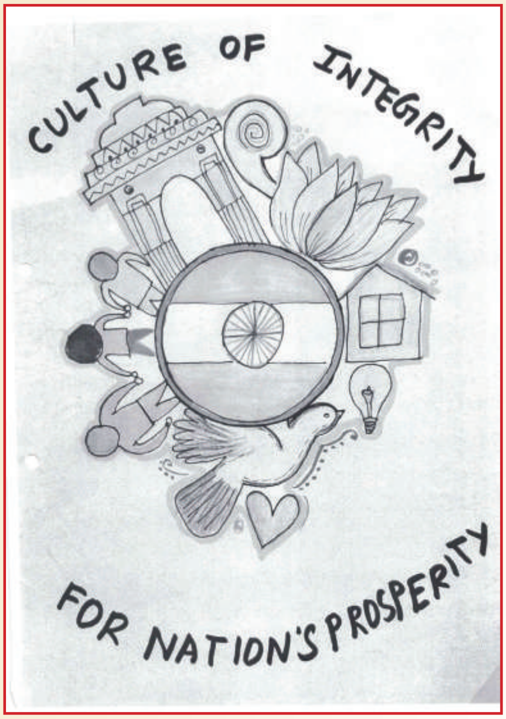

एस. शिवसोम्या, B.Tech तृतीय वर्ष,
D/o श्रीमती राधा शिवगुरु,
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

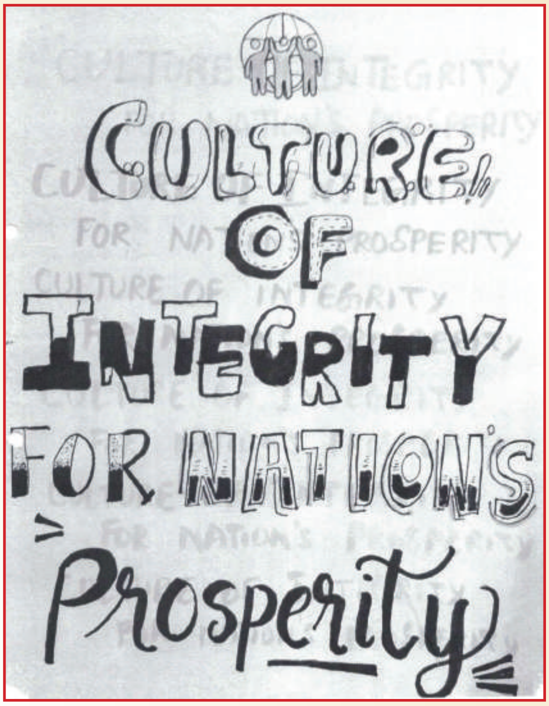

एस. शिवभुवनेश, XI standard,
S/o श्रीमती राधा शिवगुरु,
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय)

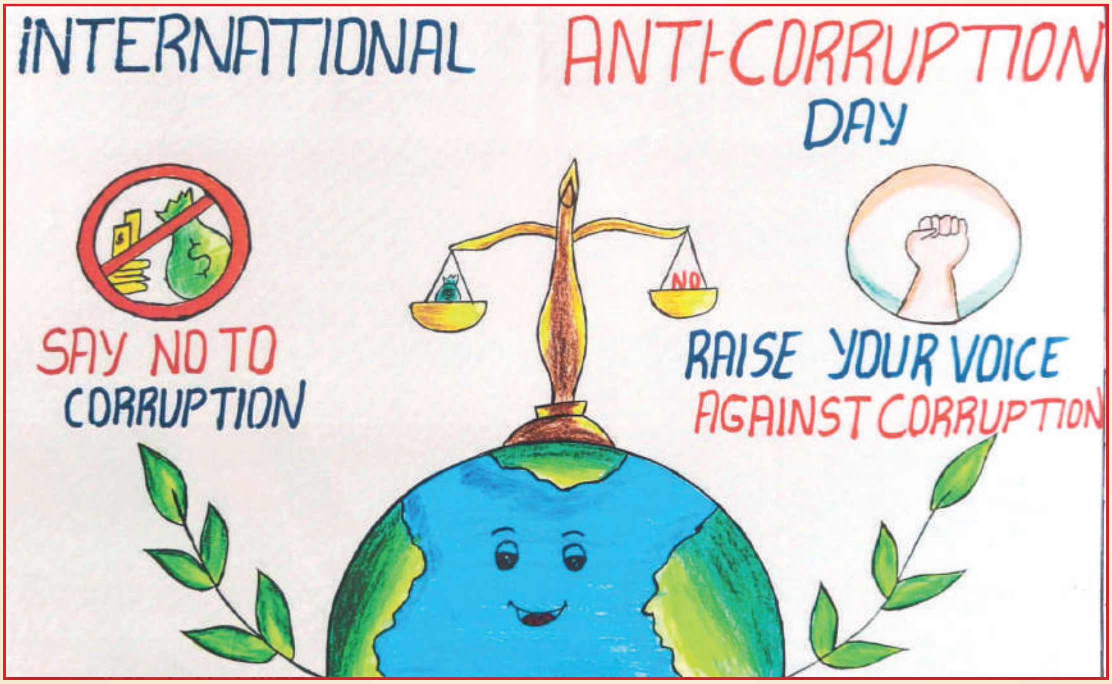

संदीप एस,
S/o शिवन्ना सी, पूर्व उप महाप्रबंधक (सी.डी)

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम मैसूर एक रिपोर्ट

- नरेन्द्र कुमार

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से 04 जनवरी, 2025 कि मैसूर में दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। सक्षम प्राधिकारी महोदय के अनुमोदन से चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय से उप महाप्रबंधक राजभाषा महोदय ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से वर्ष में एक बार क्षेत्रीय राजभाषा कार्यक्रम क्षेत्र वार आयोजित किए जाते हैं, ताकि राजभाषा से जुड़े सभी अधिकारियों को राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त नवीनतम जानकारी एवं उपलब्धियों से अवगत करवाया जा सके। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों को पुरस्कृत भी किया जाता है।

इस वर्ष यह कार्यक्रम 04 जनवरी, 2025 को मैसूर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार के राज्यपाल माननीय आरिफ मो. खान ने की तथा इस अवसर पर माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानन्द राय, मैसूर से सांसद श्री यदुवीर चामराज, कर्नाटक खुला विश्ववविद्यालय के कुलपति, माननीय सचिव, राजभाषा विभाग, सुश्री अंशुलि आर्य के साथ साथ राजभाषा विभाग के सभी वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम में राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले दक्षिण क्षेत्र के कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों को पुरस्कृत करने के साथ साथ सभी उपस्थितों को राजभाषा के प्रति जागरूक किया गया एवं राजभाषा के उतरोत्तर विकास के लिए राजभाषा विभाग की ओर से किए जा रहे नवीनतम प्रयासों को भी साझा किया गया।

हडको वार्षिक खेल दिवस 2025, पुडुचेरी विकास कार्यालय के अधिकारियों के साथ 22.02.2025 को मनाया गया।

हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नै के तत्वावधान में हडको कार्यालय प्रांगण में 23.05.2025 को हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री जॉन जोसफ वड्शेरी, महाप्रबंधक (परि.) के अध्यक्षीय सम्बोधन के साथ हुआ। श्री जॉन जोसफ वड्शेरी ने राजभाषा हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए हिंदी को राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विविधता का अविभाज्य प्रतीक बताया। इस दौरान उन्होने राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने में नराकास (उपक्रम) चेन्नै के प्रयासों की सराहना भी की।

कार्यक्रम में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के श्री नरेन्द्र कुमार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) को प्रतियोगिता के निर्णायक का दायित्व सौंपा गया। अपने सम्बोधन में सभी प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए श्री नरेन्द्र कुमार, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतियोगिता का शुभारंभ रोमांचकारी काव्य पाठ से किया और सभी प्रतिभागियों को राजभाषा क्रियाकलापों को सम्पूर्ण आत्मविश्वास के साथ करने के लिए प्रेरित किया। उन्होने भविष्य में भी राजभाषा आयोजनों में हडको की ओर से सम्पूर्ण योगदान का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर नराकास (उपक्रम) चेन्नै की सदस्य सचिव, सुश्री सेल्वी पार्थिबन ने नराकास (उपक्रम) चेन्नै की ओर से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी तथा कार्यक्रम आयोजन में सहयोग देने के लिए हडको के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में 12 सदस्य कार्यालयों से 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम की जानकारी स्थानीय समाचार पत्र में भी दी गई। कार्यक्रम आयोजन में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै से सुश्री पी. जी. जयश्री, हिंदी नोडल सहायक तथा भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड के कार्मिकों ने विशेष रूप से सहयोग दिया। श्रीमती जयश्री श्रीनिवासन, हिंदी नोडल अधिकारी, हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै की ओर से धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

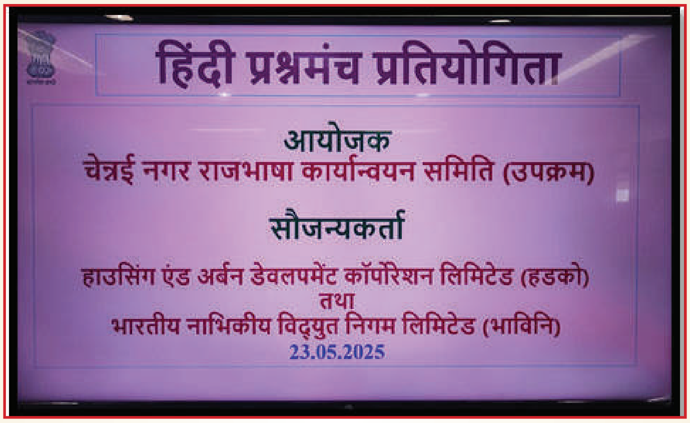

हिंदी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का अविभाज्य प्रतीक

नराकास उपक्रम चेन्नै की हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

चेन्नई. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नै ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और अधिकारियों एवं कर्मचारियों में उसके प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया। 23 मई को आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि और चेन्नई स्थित आवास और शहरी विकास निगम लिमिटेड (हुडको) के क्षेत्रीय कार्यालय के महाप्रबंधक (प्रोजेक्ट्स) जॉन जोसेफ वडासेरी ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए इसे राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विविधता का एक अविभाज्य प्रतीक बताया। इस दौरान उन्होंने राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नराकास (उपक्रम) चेन्नै की ओर से किए जा रहे प्रयासों की सराहना भी की।

उप महाप्रबंधक (राजभाषा) नरेंद्र कुमार ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन कार्मिकों को राजभाषा में आत्मविश्वास के साथ ही साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं और उन्हें भाषाई कौशल में निखार लाने का अवसर प्रदान करते हैं। इस दौरान उन्होंने भविष्य में भी ऐसे राजभाषा संवर्धन संबंधी आयोजनों के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इससे पूर्व स्वागत भाषण देते हुए नराकास की सदस्य सचिव सेल्वी पार्थिबन ने नराकास के उद्देश्यों और राजभाषा हिंदी के संवर्धन में उसकी महती भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन राजभाषा के दैनिक उपयोग को बढ़ावा देने और उसे जन-जन तक पहुंचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रतियोगिता में नराकास (उपक्रम), चेन्नै के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रश्न मंच प्रतियोगिता का संचालन भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) चेन्नई के प्रबंधक (राजभाषा) आनंद प्रसाद नोंनियाँ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन हुडको क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई की वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन) व हिंदी नोडल अधिकारी जयश्री श्रीनिवासन ने किया। आयोजन में भाविनी कलपक्कम के वरिष्ठ राजभाषा प्रबंधक राजू पांडेय और वैज्ञानिक अधिकारी जयवंत कुमार निषाद का विशेष योगदान रहा।

कार्यालय में विश्व-पर्यावरण दिवस का आयोजन

पी जी जयश्री

धरती पर जबतक पर्यावरण संरक्षित तभी तक मानव जीवन सुरक्षित है। कार्यालय में प्रत्येक कार्मिक को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने तथा पर्यावरण को बचाने के लिए तत्पर रखने के उद्देश्य से चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय और पुदुचेरी विकास कार्यालय में विश्व-पर्यावरण दिवस 2025 का आयोजन किया गया। कार्यालय में पर्यावरण पर चर्चा, वैश्विक पर्यावरण के बदलते स्वरूप पर मंथन और पर्यावरण के बचाव उपायों पर विचार-विमर्श के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण शपथ के साथ विश्व-पर्यावरण दिवस-2025 का आयोजन किया गया। सभी को पौधों का वितरण किया गया और सौर ऊर्जा से चलने वाली टार्च भेंट की गई।

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

एल. सूर्यलक्ष्मी

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, अपितु संतुलित मन एवं निर्विकारी आध्यात्मिक अवस्था प्राप्ति का सुलभ अर्वाचीन साधन है। आज की भागा-दौड़ी की ज़िंदगी में अनेक शारीरिक रोगों, मानसिक तनाव, कुंठा, अवसाद और खिन्न चित-मन जैसी समस्याओं से हर कोई ग्रस्त है। ये समस्याएँ कोई नई समस्याएँ नहीं अपितु चिर-कालिक हैं और इनका समाधान भी केवल आधुनिक दवाओं में नहीं बल्कि प्राचीन योग क्रियाओं में छिपा है। योग केवल शारीरिक समस्याओं का नहीं बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक उत्थान का साधन और सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन क्रिया है। सुखद बात तो यह है कि इस प्राचीन भारतीय पद्धति ने आज के वैज्ञानिक युग में अपना विशेष स्थान बना लिया है और सरकारी प्रयासों ने वैश्विक पटल पर आन्दोलन के रूप में इसकी उपस्थिति दर्ज करने में अपना विशेष योगदान दिया है। आज लंबी आयु के स्थान पर स्वस्थ जीवन के प्रति आस्था का भाव इसी प्राचीन भारतीय पद्धति के कारण बना है।

प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जाता है, क्योंकि 21 जून को उत्तरी गोलार्ध

में धरती पर सबसे लंबा दिन होता है अर्थात इस दिन धरती पर सूर्य की किरणे सबसे लंबे समय तक पड़ती हैं। सूर्य किरणों की धरती पर लंबी उपस्थिति का अर्थ है धरती पर अधिक समय तक आक्सीजन निर्माण की प्रक्रिया का होना और धरती के सभी जीवों को शारीरिक उत्थान के लिए लंबी अवधि का प्राप्त होना।

इस वर्ष भी चेन्नै क्षेत्रीय कार्यालय में 21 जून को योग दिवस का आयोजन किया गया। योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन तालमुत्तु कार्यालय परिसर के पार्क में सूर्य की कोमल किरणों में किया गया। सही यौगिक क्रियाओं के लिए प्रशिक्षित योगाचार्य को आमंत्रित किया गया था। प्रशिक्षित योगाचार्य की ओर से योग और योग क्रियाओं के महत्त्व पर बुनियादी जानकारी के उपरांत सूर्य नमस्कार के साथ योग सत्र का प्रारम्भ किया गया। ऊपर से नीचे के शारीरिक भागों की योगिक क्रियाओं के क्रम में सभी आवश्यक योग क्रियाओं का अभ्यास किया गाया। योग क्रियाओं के करते समय उनके लिए अपेक्षित ध्यान रखने योग बातों एवं योग विशेष से पड़ने वाले प्रभाव विशेष की भी जानकारी दी गई। सभी अधिकारियों की ओर से समस्या विशेष के लिए पूछे गए योग विशेष की जानकारी ने इस सत्र को जीवंत बना दिया।

अंत में अपने दैनिक जीवन में योग को निरंतर शामिल करने के निश्चय और योगाचार्य प्रशिक्षक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

योग का अभ्यास करें ताकि राजयोग की प्राप्ति हो

आर. सेन्थिल कुमार

योग भारत की एक प्राचीन परंपरा है, जिसे हज़ारों वर्षों से अपनाया जा रहा है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक शैली है, जो शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देती है। आज के समय में योग दुनिया भर में लोकप्रिय हो चुका है क्योंकि यह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए अनेक लाभ प्रदान करता है। ऐसा भी माना जाता है कि कुंडली में दर्शाए गए राजयोग के सकारात्मक प्रभावों को नियमित और समर्पित योग अभ्यास के माध्यम से अनुभव या सशक्त किया जा सकता है।

साल 2020 तक हम नियमित रूप से पैदल चलने और साइकिल चलाने को अपनी शारीरिक फिटनेस का हिस्सा मानते थे। लेकिन हडको प्रबंधन द्वारा वर्ष 2020 में लाइव योग सत्रों की शुरुआत और योगाचार्य वरुण जी के कुशल मार्गदर्शन में हमने योग अभ्यास प्रारंभ किया। इसके बाद हमने शारीरिक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार महसूस किया, जो केवल पैदल चलने से संभव नहीं हो पाया था। निरंतर और नियमित योग अभ्यास ने अब तक हमें कई पुरानी बीमारियों से बचाने और उन्हें प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में मदद की है।

व्यक्तिगत रूप से योग का जो सबसे बड़ा लाभ हमें मिला है, वह है शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार, विशेष रूप से लम्बे समय तक साइट निरीक्षणों और बाहरी आधिकारिक कार्यों के दौरान। नियमित अभ्यास से हमारा लचीलापन बढ़ा है, मांसपेशियाँ मजबूत हुई हैं, मुद्रा सुधरी है और संतुलन बेहतर हुआ है । इसके अतिरिक्त योग से वजन नियंत्रित करने, प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने और हृदय स्वास्थ्य में भी सहायता मिली है। प्राणायाम और आसनों के अभ्यास ने हमारे फेफड़ों की क्षमता, रक्त संचार, और पाचन क्रिया को भी बेहतर बनाया है।

योग मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। यह तंत्रिका तंत्र को शांत करके तनाव और चिंता को कम करने की क्षमता के लिए जाना जाता है। निर्माण कार्य से जुड़े हमारे पेशेवर जीवन के प्रारंभिक चरणों में हमें अक्सर ठेकेदारों/इंजीनियरों के प्रबंधन और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के दबाव में उच्च स्तर का तनाव झेलना पड़ता था। किंतु, योग को अपने दैनिक जीवन में शामिल करने के बाद इन चुनौतियों से निपटना अपेक्षाकृत आसान हो गया। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए अधिक लाभकारी है, जो उच्च दबाव वाले और चुनौतीपूर्ण कार्य वातावरण में कार्य करते हैं। ध्यान और मानसिक सजगता जैसी योग तकनीकों ने एकाग्रता को बढ़ाया है, स्मरण शक्ति को मजबूत किया है और मानसिक स्पष्टता को प्रोत्साहित किया है । नियमित अभ्यास करने वालों ने नींद की गुणवत्ता और भावनात्मक संतुलन में भी सुधार की बात कही जाती है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ मानसिक या भावनात्मक अस्थिरता अधिक होती है।

योग गहराई से आंतरिक शांति और आत्म-जागरूकता को भी प्रोत्साहित करता है। यह व्यक्ति को वर्तमान क्षण में जीने और जीवन की चुनौतियों का सामना शांति और संयम के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है। योग आत्म-अनुशासन, करुणा और संतुलित जीवनशैली को बढ़ावा देता है। योगाचार्य इसके आध्यात्मिक पक्ष व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा से जोड़ते हैं, जिससे व्यक्तिगत विकास, भावनात्मक संतुलन और जीवन में संतुष्टि की अनुभूति होती है।

निष्कर्षतः योग एक शक्तिशाली और समग्र प्रणाली है, जो सभी आयु वर्गों के लोगों को लाभ पहुंचाती है। यह आम बीमारियों जैसे सर्दी और बुखार के मामले में भी दवाओं पर निर्भरता को कम कर देता है। चाहे योग का अभ्यास शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति या आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाए, यह जीवन की गुणवत्ता को निश्चित रूप से बेहतर बनाता है। सप्ताह में केवल तीन से चार बार भी सरल आसनों का अभ्यास करने से ही योग का लाभ लिया जा सकता है। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए विशेष रूप से कारगर है जो व्यस्त या चुनौतीपूर्ण दिनचर्या में रहते हैं।

हडको में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की उपादेयता

राधा शिवगुरु

बुद्धिमत्ता और नवाचार के साथ शहरी भारत का रूपांतरण

डेटा संचालित इस युग में, हडको की आयोजना, संचालन और वित्तपोषण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को एकीकृत करने से महत्वपूर्ण क्षमता का दोहन हो सकता है और शहरी विकास को नए सिरे से परिभाषित किया जा सकता है।

एआई हडको को पारंपरिक तरीकों से हटकर बुद्धिमान और डेटा-आधारित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण परियोजनाओं को प्राथमिकता देने के लिए जनसंख्या घनत्व, प्रवासन और बुनियादी ढाँचे की कमियों का आकलन करता है। सिमुलेशन मॉडल नई सड़कों या आवासों के यातायात, प्रदूषण और जल प्रवाह पर दीर्घकालिक प्रभावों का अनुमान लगाते हैं, जिससे स्थायी योजना को बढ़ावा मिलता है।

एआई और जीआईएस का संयोजन भूमि और जनसांख्यिकीय आंकड़ों का विश्लेषण करके विकास के लिए इष्टतम क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है, साथ ही कमज़ोर या खराब संपर्क वाले क्षेत्रों से भी बचाता है। पूर्वानुमान मॉडल झुग्गी-झोपड़ियों के विस्तार या बदलती ऊर्जा ज़रूरतों जैसे रुझानों का पूर्वानुमान लगाकर समय पर और सूचित स्थल चयन का मार्गदर्शन करते हैं।

रोज़गार, आय और प्रवासन पैटर्न पर आधारित आवास मांग के पूर्वानुमान, उच्च आवश्यकता वाले क्षेत्रों में निवेश को दिशा देने में मदद करते हैं। एआई एल्गोरिदम बजट और खरीद में विसंगतियों की पहचान करके, देरी और वित्तीय रिसाव को कम करके पारदर्शिता भी बढ़ाते हैं।

वित्त में, एआई उपकरण पुनर्भुगतान क्षमता का आकलन करते हैं और उपयुक्त ऋण संरचनाएँ सुझाते हैं। धोखाधड़ी का पता लगाने वाली प्रणालियाँ बढ़ी हुई लागतों या संदिग्ध लेनदेन की निगरानी करती हैं। बाजार पूर्वानुमान मॉडल बॉन्ड जारी करने के समय का निर्धारण करने और स्थायी ब्याज दरें निर्धारित करने में मदद करते हैं। जोखिम मॉडल परियोजनाओं में निष्पादन जोखिमों का मूल्यांकन करके क्रेडिट रेटिंग और निधि आवंटन में सुधार करते हैं।

एआई बजटिंग बेहतर निधि उपयोग सुनिश्चित करता है और तात्कालिकता एवं प्रदर्शन के आधार पर निधि प्रस्तावों को रैंक करता है। निवेशक व्यवहार विश्लेषण और बॉन्ड मूल्य निर्धारण उपकरणों के माध्यम से भी धन उगाहने को मज़बूत किया जाता है। पूर्वानुमानित ब्याज दर उपकरण प्रत्येक पहल के दीर्घकालिक लाभों का अनुमान लगाते हैं।

जनरेटिव एआई भू-भाग, यातायात और सूर्य के प्रकाश के आधार पर आवास और बुनियादी ढाँचे के लिए इष्टतम लेआउट डिज़ाइन करने में सहायता करता है। मूल्य अनुकूलन उपकरण निवेशकों की रुचि और उधारकर्ता की सामर्थ्य के बीच संतुलन बनाते हैं। एआई ऑडिटिंग नकली ठेकेदारों और लागत वृद्धि का पता लगाकर सार्वजनिक धन की सुरक्षा करती है।

एआई हडको की आयोजना, वित्तपोषण और क्रियान्वयन को एक कार्यनीतिक, बुद्धिमान प्रक्रिया में बदल देता है—इसे एक वित्तपोषक से राष्ट्रीय शहरी बुद्धिमत्ता में परिवर्तित किया जा सकता है ।कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की असली ताकत एआई की शक्ति को हडको के बेहतर शहरी भारत के स्थायी दृष्टिकोण के साथ जोड़ने में निहित है।

राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती समारोह – नई दिल्ली

नरेन्द्र कुमार

राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 26 जून, 2025 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अमित शाह, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार ने इस समारोह में भाग लिया। इनके अतिरिक्त श्रीमती रेखा गुप्ता, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार, श्री बंडी संजय कुमार, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति, डा. सुधांशु त्रिवेदी, संसद सदस्य, राज्य सभा, श्रीमती सुधा मूर्ति, संसद सदस्य, राज्य सभा, श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली, डा. राजलक्ष्मी, कृष्णन, हिंदी शिक्षाविद एवं लेखक, दक्षिण भारत (तमिल) तथा श्री बालेश्वर राय, पूर्व सचिव (सेवानिवृत्त), राजभाषा विभाग इस कार्यक्रम के भाग लेने वाले सम्माननीय अतिथिगण थे। इस अवसर पर हिंदी भाषा में आईएएस की परीक्षा पास करने वाले अधिकारियों को भी विशेष रूप से कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस कार्यक्रम में आमंत्रित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं अन्य सभी गणमान्य अतिथियों की ओर से संदेश दिया गया कि हिंदी भाषा का किसी भी भारतीय भाषा से कोई भी वैर भाव नहीं है और न ही हिंदी भाषा का किसी भारतीय भाषा से कोई तुलनात्मक श्रेष्ठता दावा है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं से सखी भाव रखती है और सभी भारतीय भाषायों की शब्द सम्पदा से समुन्नत हुई है। सभी भारतीय भाषाएँ कतिपय गुणों से सम्पन्न हैं और हमारी मंशा किसी भाषा विशेष का वर्चस्व स्थापित करने से नहीं अपितु भारतीय भाषायों के विकास से है।

इस अवसर पर श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति ने समिति के अब तक किए गए प्रयासों की जानकारी दी तथा समिति की सिफारिशों पर माननीय राष्ट्रपति की ओर से नौ खंडों में जारी आदेशों के पूर्ण सजगता के साथ अनुपालन की अपेक्षा पर ज़ोर दिया। .

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में डा. राजलक्ष्मी, कृष्णन, हिंदी शिक्षाविद एवं लेखक, दक्षिण भारत (तमिल) ने विशेष रूप से तमिलनाडु में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उनकी ओर से किए जा रहे प्रयासों तथा हिंदी साहित्य में उनके योगदान की जानकारी दी । इसके अतिरिक्त डा. निशांत जैन, आईएएस, सचिव जयपुर विकास प्राधिकरण, डा. बिचार दास, निदेशक (सेवानिवृत्त), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा डा. वर्षा दास, शिक्षाविद (गुजराती) ने भी दूसरे सत्र को संबोधित किया । इसके उपरांत अर्धसैनिक बलों की ओर से देशभक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया ।

कार्यक्रम की महत्ता एवं भव्यता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण भारत वर्ष से सभी केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के सभी उपक्रमों, बैंकों, स्वायत्त संस्थानों, संवैधानिक निकायों तथा अर्धसैनिक बलों के राजभाषा अधिकारियों तथा हिंदी प्रेमियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर कतिपय बैंकों तथा हिंदी सेवी निजी संस्थानों की ओर से प्रदर्शिनी भी लगाई गई ।

माँ

जयश्री श्रीनिवासन

वही है, जो पीटती है मुझे, मेरी गलतियों पर
.........और दर्द महसूस करती है स्वयं
वही है, जो डांटती है मुझे, रखा खाना थाली में ठंडा होने पर
.........और करती है कामना मेरी स्वास्थ्य की
वही है, जो चूम लेती है मुझे, सोती हुई को
.........और मन ही मन मुसकराती है
वही है, जो झूम उठती है, मुझे बढ़ता देख
.........और होती है प्रसन्न
वही है, जो मेरे साथ खड़ी है, मेरी हर मुसीबत में
.........और मेरे सारे कष्ट सहने को रहती है तत्पर
वही है, जो खुश होती है, मेरी सफलता पर
.........और मानती है उसे जीत अपनी
वही है, जो मुझे आज भी समझती है, बच्चा
.........और करती है न्योछावर सम्पूर्ण प्यार
वही है, जो आज भी खड़ी है, मेरे समर्थन में
.........और खड़ी है मजबूत चट्टान बनकर मेरे साथ
वही है, जिसके दिल में मेरे लिए आज भी है, विशाल जगह
.........और अथाह प्रेम
यह वही है, जिसे हम माँ कहते हैं..........
यह वही है, जो यहाँ से चले जाने के बाद भी, मन से नहीं जाती
यह वही है, जो आज भी मेरे मन, मेरी आत्मा में बसी है,
यह वही है, जिसे मैं आज भी याद करती हूँ...........

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत अभिलेखों की छंटाई और निपटान : एक रिपोर्ट

ए उमा

स्वच्छता अभियान के संबंध में मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय में सभी फाइलों, अभिलेखों और दस्तावेजों की व्यापक समीक्षा की गई तथा हडको की निपटान नीति में उल्लिखित निर्धारित मापदण्डों के आधार पर निम्नलिखित फाइलों को नष्ट करने के लिए पहचाना गया.

निपटान के लिए पहचानी गई फ़ाइलों का सारांश

क्र.सं.	विवरण	फ़ाइलों की सं.
1	एच बी ए फ़ाइलें	17
2	प्रशासन – सामान्य फ़ाइलें	57
3	सामान्य/कार्य योजना फ़ाइलें	136
4	वित्त फ़ाइलें	12
5	योजना फ़ाइलें	500
6	परामर्श फ़ाइलें	35
7	वित्त बही	49
8	कानूनी प्रक्रिया फ़ाइलें	94
9	पुरानी लॉग बुक	10
10	खुदरा वित्त फ़ाइलें	102
11	खुदरा वित्त खाता फ़ाइलें	42
	कुल	**1054**

उपरोक्त के अतिरिक्त, निम्नलिखित अप्रचलित वस्तुओं और दस्तावेजों की भी निपटान के लिए पहचान की गई :

- हडको निवास आवेदन
- ऋण समझौते
- अप्रयुक्त चेक
- पुरानी वार्षिक रिपोर्ट
- विस्तृत परियोजना रिपोर्ट
- व्यवसाय विकास रिपोर्ट
- अन्य वांछित/अप्रयुक्त कागजात

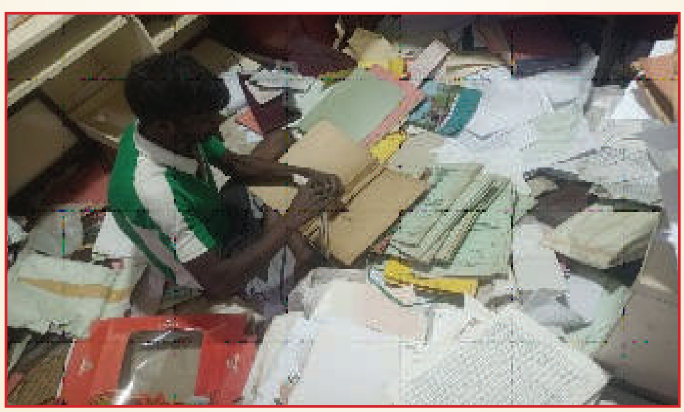

इन सामग्रियों की गोपनीय प्रकृति को देखते हुए इनके निपटान के लिए श्रेडिंग तरीके को चुना गया। आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने के बाद, मेसर्स चेन्नई श्रेडर को इस कार्य के लिए नियुक्त किया गया। यह सेवा निःशुल्क प्रदान की गई, इस शर्त पर कि कटा हुआ कागज़ फर्म के पास ही रहेगा। श्रेडिंग के बाद फर्म द्वारा सुरक्षित निपटान की पुष्टि का पल्प प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा।

निपटान के बाद का प्रभाव

बड़ी मात्रा में फाइलों और दस्तावेजों को हटाने से भंडारण के लिए पर्याप्त जगह खाली हो गई है। सभी सक्रिय और आवश्यक फाइलों को पुनर्गठित करके फाइलिंग रूम में कॉम्पैक्टर में स्थानांतरित कर दिया गया है। परिणामस्वरूप, निम्नलिखित कार्यालय परिसंपत्तियां अप्रचलित हो गई हैं और अब क्षेत्रीय कार्यालय में उपयोग में नहीं हैं :

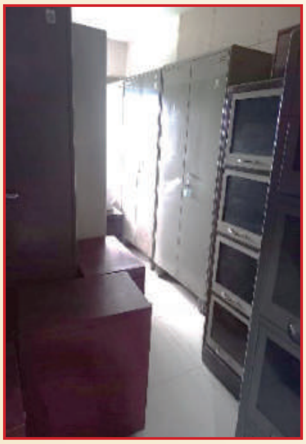

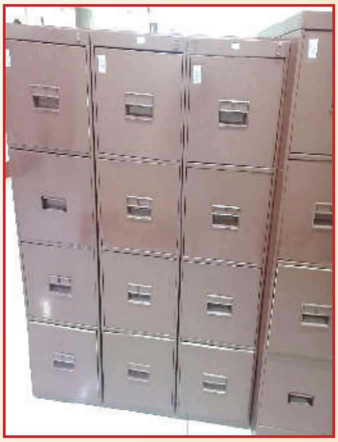

9 गोदरेज स्टोर वेल , 3 बुकशेल्फ़ , 7 स्लॉटेड एंगल रैक , 6 पुल-अप स्टोरेज कैबिनेट , कुछ सिंगल स्टोरेज कैबिनेट सोफ़ा, बड़ी टेबल , कुछ साइड टेबल.

इन वस्तुओं को निपटान के लिए चिन्हित कर लिया गया है तथा जेम पोर्टल के माध्यम से इनके निपटान की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

"समर्पित आँखें : कन्नप्पा की कहानी"

पाण्यम स्मरणी गौड़

श्रीकालहस्ती के निकट घने जंगलों में तिन्नाडु नाम का एक खतरनाक शिकारी रहता था। यह बाद में कन्नप्पा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। विद्वान पुजारियों या ऋषियों की तरह वह कर्मकांडों या वेदों का ज्ञाता था, फिर भी उसका हृदय भगवान शिव के प्रति प्रेम से ओतप्रोत था।

एक दिन घने जंगल में उसे एक शिवलिंग दिखाई दिया। उसे मूर्ति ज्ञान नहीं था, उसने अपने विवेक के अनुसार शिवलिंग को जीवित प्राणी समझ उसपर जंगली सूअर का मांस, अपने बालों में लगे फूल और मुँह में भरे जल को समर्पित किया ।

उसने शिवलिंग को एक मूर्ति मात्र न मानकर उसकी एक जीवित प्राणी की तरह अपने हृदय से उसकी पूजा की।

मंदिर का पुजारी यह सब देखकर भयभीत हो गया। उसने विरोध करते हुए कहा, "शिव की पूजा ऐसे नहीं की जाती !" लेकिन भगवान शिव तो भीतर ही भीतर यह सब देखकर मुस्कुरा रहे थे, क्योंकि यह भक्ति अपरंपरागत जरूर थी, परंतु शुद्ध थी।

एक दिन कन्नप्पा ने देखा कि लिंग की एक आँख से खून बह रहा है। बिना किसी हिचकिचाहट के उसने खून को बहने से रोकने के लिए अपनी एक आँख निकालकर लिंग पर रख दी। जब तभी लिंग की दूसरी आँख से खून बहने लगा। अब वह अपनी दूसरी आँख भी उसपर रखने के लिए तैयार हो गया। लेकिन तभी उसे महसूस हुआ कि दूसरी आँख निकालने पर तो वह अंधा हो जाएगा और फिर वह अपनी दूसरी आँख लिंग पर कैसे रखेगा ? इसलिए उसने दूसरी आँख रखने के लिए निशाना साधने हेतु लिंग के उस जगह पर अपना पैर रख दिया।

जैसे ही वह अपनी दूसरी आँख का बलिदान देने वाला था, तभी उसके निश्चल प्रेम को देखकर भगवान शिव अपने दिव्य रूप में प्रकट हुए और उसे अपने गले लगाकर बोले "वत्स, तुमने पूजा से बढ़कर समर्पण दिया है—तुमने तो स्वयं को ही समर्पित कर दिया है।"

भगवान शिव ने कन्नप्पा को अनन्त कृपा का आशीर्वाद दिया तथा कहा कि कोई भी भक्त ऐसी भक्ति नहीं कर सकता।

(कहानी में दिखाया गया फोटो लेखिका का बनाया हुआ है)

तिरुमलय दर्शन : प्रसिद्ध तीर्थस्थल

आर वैदेही

तिरुपति बालाजी मंदिर को सात पहाड़ियों के मंदिर - सप्तगिरि के नाम से जाना जाता है। ये सात पहाड़ियाँ - शेषाद्रि, नीलाद्रि, गरुड़ाद्रि, अंजनाद्रि, वृषभाद्रि, नारायणाद्रि और वेंकटाद्रि हैं । श्री वेंकटेश्वर (भगवान विष्णु के एक अवतार) मंदिर, सबसे प्रमुख वेंकटाद्रि पहाड़ी पर स्थित है और इसे दुनिया के सबसे समृद्ध और सबसे अधिक देखे जाने वाले मंदिरों में माना जाता है। यह शहर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र भी है, जो हर साल लाखों भक्तों और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। भक्तजन ईश्वरीय आशीर्वाद, आध्यात्मिक संतुष्टि और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए श्री वेंकटेश्वर मंदिर जाते हैं।

यहाँ मनाया जाने वाला तिरुमाला उत्सवम, ब्रह्मोत्सवम को दर्शाता है, जो पुरत्तासी महीने (तमिल कैलेण्डर का छठ्ठा महीना, सितम्बर के मध्य से अक्टूबर के मध्य तक) के दौरान मनाया जाने वाला एक वार्षिक त्योहार है। यह त्योहार भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी को समर्पित है और तिरुमाला में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में माना जाता है। माना जाता है कि ब्रह्मोत्सव की शुरुआत स्वयं भगवान ब्रह्मा ने की थी। इस दौरान देवता को प्रत्येक दिन अलग-अलग वाहन (रथों) – ध्वजारोहण, शेष वाहनम, हंस वाहनम, सिंह वाहनम, गरुड़ वाहनम, हनुमंत वाहनम, कल्पवृक्ष वाहनम, और सर्व भूपाल वाहनम पर ले जाया जाता है। अंतिम दिन चक्र स्नानम और ध्वजारोहणम के साथ यह विधि समाप्त होती है।

शुभ वैकुंड एकादशी और मार्गाज़ी माह (तमिल कैलेण्डर का नौवाँ महीना, दिसम्बर के मध्य से जनवरी के मध्य तक) तिरुमला के अन्य प्रमुख त्योहार हैं । इस दौरान पवित्र चक्रस्नानम अनुष्ठान किया जाता है, जो भक्तों को भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने और उनकी दिव्य ऊर्जा में लीन होने का अवसर प्रदान करते हैं। फ़रवरी के दौरान रथसप्तमी मनाया जाता है । इस दौरान देवताओं को भव्य रूप से सुसज्जित रथों पर एक भव्य जुलूस के रूप में निकाला जाता है।

इस उत्सव में भारी भीड़ उमड़ती है। भगवान बालाजी के दर्शन और आशीर्वाद को पाने के लिए भक्त घंटों कतार में खड़े रहते हैं। मंदिर की प्रशासनिक व्यवस्था तिरुपति तिरुमलय देवस्थानम (टीटीडी) के पास है । देवस्थानम बोर्ड विभिन्न दर्शनों जैसे सुप्रभातम दर्शन, सर्वदर्शन, विशेष प्रवेश दर्शन, दिव्य दर्शन (पहाड़ियों पर चढ़ने वाले भक्तों के लिए विशेष दर्शन) तथा दिव्यांगों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष दर्शन की व्यवस्था करता है, ।

सभी दिनों में भगवान वेंकटेश्वर की सुप्रभातम् की अर्जित सेवा, सुबह 2.30 बजे की जाती है, उसके बाद थोमाला अर्चना और अन्य सेवाओं में कल्याणोत्सव, अर्जित ब्रह्मोत्सव, डोलोत्सव, वसंतोत्सव और सहस्र दीपंकर सेवा शामिल

हैं । अंत में मध्यरात्रि 1.30 बजे एकांत सेवा होती है। आमतौर पर अंतिम एकांत सेवा के बाद मंदिर लगभग 1:30 बजे बंद हो जाता है और 2.30 बजे सुप्रभात सेवा के साथ खुलता है । इस प्रकार भक्तों को ईश्वरीय दर्शन से दिन में 23 घंटे आशीर्वाद प्राप्त होता है।

भक्त, अपने समर्पण के रूप में निम्न चढ़ावा चढ़ाते हैं

- कल्याणकट्टा में मुंडन,

- तिरुपति से श्रीवारी मेट्टु और अलीपिरी की पहाड़ियों पर चलना (ये दोनों पैदल रास्ते तिरुमलय की ओर जाते हैं)

- मंदिर में अंग प्रदक्षिणा

- तुलाभरम (अपने वजन के बराबर अनाज)

प्रसिद्ध तिरुपति लड्डू (मेवा युक्त मीठा लड्डू) मंदिर के प्रसाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । मंदिर देवस्थानम तीर्थयात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन और आवास की व्यवस्था करता है तथा तिरुमलय में निःशुल्क बस सेवा भी प्रदान करता है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि तिरुमलय वेंकटेश्वर मंदिर के दर्शन के बाद मुझे मानसिक शांति और आध्यात्मिक तृप्ति का अनुभव हुआ है, ईश्वर से गहरा लगाव हुआ है और उनमें विश्वास की भावना बढ़ी है। मुझे हर बार लगता है कि मैं श्री वेंकटेश्वर मंदिर से सकारात्मक ऊर्जा अपने साथ ले जा रही हूं।

तिरुमाला के अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में आकाशगंगा तीर्थम (जो अपने पवित्र झरने के लिए जाना जाता है), सिलाथोरनम (एक प्राकृतिक चट्टान संरचना से बना मेहराब) और तिरुमाला हिरण पार्क रिजर्व शामिल हैं।

मंदिर के आस - पास बने अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में तिरुचानूर में श्री पद्मावती अम्मावरी मंदिर, श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर, श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर और इस्कॉन मंदिर तथा श्रीनिवास मंगापुरम में बने श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर शामिल हैं।

तिरुमलय जाने के लिए पहले तिरुपति पहुँचना होता है। तिरुपति तक देश के सभी भागों से आसानी से पहुंचा जा सकता है। चेन्नई, बेंगलुरु और वेल्लोर से तिरुपति जाने की सीधी बसें उपलब्ध हैं। चेन्नई से भी सड़क/रेल/हवाई मार्ग से तिरुपति पहुँचा जा सकता है। इसके अतिरिक्त रेल मार्ग से पहुँचने के लिए भी निकटतम रेलवे स्टेशन तिरुपति है। हवाई मार्ग से पहुँचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा तिरुपति से लगभग 15 किमी दूर रेनिगुंटा के पास है। इस घरेलू हवाई अड्डे से हैदराबाद, विशाखापत्तनम, चेन्नई, नई दिल्ली और बेंगलुरु के लिए सीधी उड़ानें हैं और अब इसे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के रूप में उन्नत किया जा रहा है। तिरुपति पहुँचने के बाद यहाँ से तिरुमलय की दूरी लगभग 26 किलोमीटर है और तिरुपति से तिरुमलय तक जाने के सभी परिवहन साधन उपलब्ध हैं । तिरुमलय जाने के लिए तिरुपति से हर 2 मिनट में सीधी बस सेवाएँ भी उपलब्ध हैं।

कई भक्त अपनी मन्नत पूरी करने के लिए पैदल ही तिरुमलय की पहाड़ियों पर चढ़ते हैं। इसके लिए टीटीडी पैदल मार्ग पर विश्राम गृह, सुरक्षा, कैंटीन, शौचालय, पेयजल, चिकित्सा सहायता और रास्ते में भक्ति संगीत की व्यवस्था करता है तथा उनका रखरखाव करता है। टीटीडी तिरुमलय की पहाड़ियों पर पैदल चढ़ने वाले भक्तों का सामान ले जाने की निःशुल्क सुविधा भी प्रदान करता है।

****

राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती समारोह – हैदराबाद

नरेन्द्र कुमार

राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 11 जुलाई, 2025 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से जीएमसी बालयोगी इनडोर स्टेडियम, गच्चीबावली, हैदराबाद में स्वर्ण जयंती समारोह (दक्षिण संवाद) का आयोजन किया गया । समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री जी किशन रेड्डी, माननीय केंद्रीय खान मंत्री, भारत सरकार ने इस समारोह में भाग लिया। इनके अतिरिक्त श्री हरिवंश, माननीय उप सभापति, राज्यसभा, श्री पवन कल्याण, माननीय उप मुख्यमंत्री, आंध्र-प्रदेश, प्रो. मणिक्यांबा, हिंदी शिक्षाविद, तेलंगाना, प्रो. अनंत कृष्णन, हिंदी शिक्षाविद, तमिलनाडु, श्रीमति अंशुली आर्य, माननीय सचिव, राजभाषा विभाग तथा श्रीमति मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव राजभाषा विभाग इस कार्यक्रम के भाग लेने वाले सम्माननीय अतिथिगण थे। .

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस कार्यक्रम में आमंत्रित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि एवं अन्य सभी गणमान्य अतिथियों की ओर से संदेश दिया गया कि हिंदी भाषा को भारत के संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के कारण सरकारी काम काज में इसके प्रयोग के अतिरिक्त कोई भाषा विकल्प नहीं है । प्रादेशिक एवं स्थानीय भाषाओं से हिंदी का कोई भी वैर भाव नहीं है और न ही किसी भी भारतीय भाषा का आपस में कोई तुलना का प्रश्न है। भारतीय संविधान में सभी भारतीय भाषाओं को एक समान स्थान प्राप्त है, केवल शासकीय कार्यों को हिंदी में किए जाने का प्रावधान है।

इस अवसर पर श्री पवन कल्याण, माननीय उप मुख्यमंत्री, आंध्र-प्रदेश ने अपनी बात हिंदी भाषा के साथ-साथ तेलुगु भाषा में भी रख कर सभी प्रतिभागियों का मन मोह लिया।कार्यक्रम के दूसरे सत्र में प्रो. मणिक्यांबा, हिंदी शिक्षाविद, तेलंगाना, प्रो. अनंत कृष्णन, हिंदी शिक्षाविद, तमिलनाडु, प्रो. टी आर भट्ट, हिंदी शिक्षाविद, कर्नाटक, प्रो. चर्ल अन्नपूर्णा, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने विशेष रूप से दक्षिण भारत में हिंदी-प्रेम एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हो रहे निजी की जानकारी दी । इसके उपरांत दक्षिण भारत के प्रत्येक राज्य की नृत्य शैली पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी सुंदर प्रस्तुति की गई । कार्यक्रम में दक्षिण भारत स्थित राज्यों के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत वर्ष से सभी केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के सभी उपक्रमों, बैंकों, स्वायत्त संस्थानों, संवैधानिक निकायों तथा अर्धसैनिक बलों के राजभाषा अधिकारियों तथा हिंदी प्रेमियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

काबुलीवाला

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानी)

सी पलानी

मेरी पाँच बरस की लड़की मिनी से घड़ीभर भी बोले बिना नहीं रहा जाता। एक दिन वह सवेरे-सवेरे ही बोली, "बाबूजी, रामदयाल दरबान है न, वह काक को कौवा कहता है। वह कुछ जनता नहीं न बाबूजी।" मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने दूसरी बात छेड़ दी। "देखो बाबूजी भोला कहता है आकाश में हाथी सूंड से पानी फेंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बाबूजी भोला झूठ बोलता है न ? और फिर वह खेल में लग गई।

मेरा घर सड़क के किनारे है। एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी। अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ी गई और बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगी, "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले !"

कंधों पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की पिटारी लिए एक लंबा सा काबुली धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी भीतर भाग गई। उसे डर लगा कि कहीं वह उसे पकड़ न ले जाए। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो-चार बच्चे मिल सकते हैं।

काबुली ने मुस्कराते हुए मुझे सलाम किया। मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा। फिर वह बोला "बाबू साहब आप की लड़की कहाँ गई ?"

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया। काबुली ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देना चाहा पर उसने कुछ न लिया। डरकर वह मेरे घुटनों से चिपट गई। काबुली से उसका पहला परिचय इस तरह हुआ। कुछ दिन बाद किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था। देखा कि मिनी काबुली से खूब बातें कर रही है और काबुली मुसकुराता हुआ सुन रहा है। मिनी की झोली बादाम-किशमिश से भारी हुई थी। मैंने काबुली को अठन्नी देते हुए कहा, "इसे यह सब क्यों दिया ? अब मत देना।" फिर मैं बाहर चला गया।

कुछ देर तक काबुली मिनी से बातें करता रहा। जाते समय वह अठन्नी मिनी की झोली में डालता गया। जब मैं घर लौटा तो देखा मिनी की माँ काबुली से अठन्नी लेने के कारण उस पर खूब गुस्सा हो रही है।

काबुली प्रतिदिन आता रहा। उसने किशमिश बादाम दे-देकर मिनी के छोटे से हृदय पर काफी अधिकार जमा लिया था। दोनों में बहुत-बहुत बातें होतीं और वे खूब हंसते। रहमत काबुली को देखते ही मेरे लड़की हँसती हुई पूछती, "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले ! तुम्हारी झोली में क्या है ?"

रहमत हँसता हुआ कहता, "हाथी।" फिर वह मिनी से कहता, "तुम ससुराल कब जाओगी?"
इसपर उलटे वह रहमत से पूछती, "तुम ससुराल कब जाओगे ?"

रहमत अपना मोटा घूंसा तानकर कहता, "हम ससुर को मारेगा।" इस पर मिनी खूब हँसती।

हर साल सर्दियों के अंत में काबुली अपने देश चला जाता। जाने से पहले वह सब लोगों से पैसा वसूल करने में लगा रहता। उसे घर-घर घूमना पड़ता, मगर फिर भी प्रतिदिन वह मिनी से एक बार मिल जाता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा कुछ काम कर रहा था। ठीक उसी समय सड़क पर बड़े ज़ोर का शोर सुनाई दिया। देखा तो अपने रहमत को दो सिपाही बांधे लिए जा रहे हैं। रहमत के कुर्ते पर खून के दाग हैं और सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा।

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत मे मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपए उस पर बाकी थे, जिन्हे देने से उसने इनकार कर दिया था। बस, इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और काबुली ने उसे छुरा मार दिया।

इतने में "काबुलीवाले, काबुलीवाले" कहती हुई मिनी घर से निकाल आई। रहमत का चेहरा क्षण भर के लिए खिल उठा। मिनी ने आते ही पूछा, "तुम ससुराल कब जाओगे ?" रहमत ने हँसकर कहा, "हाँ, वहीं तो जा रहा हूँ।"

रहमत को लगा कि मिनी उसके उत्तर से प्रसन्न नहीं हुई। तब उसने घूंसा दिखाकर कहा, "ससुर को मारता पर क्या करूँ, हाथ बंधे हुए हैं।
छुरा चलाने के अपराध में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।
काबुली का ख्याल धीरे-धीरे मेरे मन से बिलकुल उतर गया और मिनी भी उसे भूल गई।

कई साल बीत गए।
आज मेरी मिनी का विवाह है। लोग आ-जा रहे हैं। मैं अपने कमरे में बैठा हुआ खर्च का हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत सलाम करके एक ओर खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी और न चेहरे पर पहले जैसी खुशी। अंत में उसकी ओर ध्यान से देखकर पहचाना कि यह तो रहमत है।
मैंने पूछा, "क्यों रहमत कब आए ?"

"कल ही शाम को जेल से छूटा हूँ," उसने बताया।
मैंने उससे कहा, "आज हमारे घर में एक जरूरी काम है, मैं उसमे लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।"
वह उदास होकर जाने लगा। दरवाजे के पास रुककर बोला, ज़रा बच्ची को नहीं देख सकता ?"
शायद उसे यही विश्वास था कि मिनी अब भी वैसी ही बच्ची बनी हुई है। वह अब भी पहले की तरह "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले" चिल्लाते हुए दौड़ी चली आएगी। उन दोनों की उस पुरानी हंसी और बातचीत में किसी तरह की रुकावट न होगी। मैंने कहा, "आज घर में बहुत काम है। आज उससे मिलना न हो सकेगा।"

वह उदास हो गया और सलाम करके दरवाजे से बाहर निकाल गया।

मैं सोच ही रहा था कि उसे वापस बुलाऊँ। इतने में वह स्वयं ही लौट आया और बोला, "यह थोड़ा-सा मेवा बच्ची के लिए लाया था। उसे दे दीजिएगा।"

मैंने उसे पैसे देने चाहे पर उसने कहा, "आपकी बहुत मेहरबानी है बाबू साहब ! पैसे रहने दीजिए।" फिर जरा ठहरकर बोला, "आपकी जैसी मेरी भी एक बेटी है। मैं उसकी याद कर-करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ा-सा मेवा ले आया करता हूँ। मैं यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।"

उसने अपने कुर्ते की जेब में हाथ डालकर एक मैला-कुचैला मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा निकाला और बड़े जतन से उसकी चारों तह खोलकर दोनों हाथों से उसे फैलाकर मेरी मेज़ पर रख दिया। देखा कि कागज़ के उस टुकड़े पर एक नन्हें से हाथ के छोटे-से पंजे की छाप है। हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर, कागज़ पर उसी की छाप ले ली गई थी। अपनी बेटी कि इस याद को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ते के गली-कूचों में सौदा बेचने के लिए आता है।
यह देखकर मेरी आँखें भर आई। सबकुछ भूलकर मैंने उसी समय मिनी को बाहर बुलवाया। विवाह की पूरी पोशाक और गहने पहने मिनी शरम से सिकुड़ी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुली पहले तो सकपका गया। उससे पहले जैसी बातचीत न करते बना। बाद में वह हंसते हुए बोला, "लल्ली ! सास के घर जा रही है क्या ?"

मिनी अब सास का अर्थ समझने लगी थी। मारे शरम के उसका मुँह लाल हो उठा।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी सांस भरकर रहमत ज़मीन पर बैठ गया। उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ होगा, कौन जाने ? वह उसकी याद में खो गया।

मैंने कुछ रुपए निकालकर उसके हाथ पर रख दिए और कहा, "रहमत ! तुम अपनी बेटी के पास देश चले जाओ।

****

स्वतंत्रता दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताएं : एक रिपोर्ट

ए उमा

राष्ट्रीय त्योहारों को अधिक सहभागी तरीके से मनाने की भारत सरकार की पहल और मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों के अनुरूप, स्वतंत्रता दिवस 2025 के उपलक्ष्य में चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय और पुडुचेरी विकास कार्यालय में प्रतियोगिताओं की श्रृंखला आयोजित की गई। ये कार्यक्रम कर्मचारियों में देशभक्ति और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की भावना को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किए गए। कर्मचारियों की ओर से उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया मिली और प्रशिक्षुओं सहित लगभग सभी अधिकारियों ने इसमें भाग लिया।

देश भक्ति गीत या काव्य पाठ

देश भक्ति गीत गायन/काव्य पाठ कार्यक्रम ऑनलाइन एवं ऑफलाइन तरीके से आयोजित किया गया। इसमें चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय से सात और पुदुचेरी विकास कार्यालय से दो अधिकारियों सहित कुल नौ प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को किसी भी भारतीय भाषा में देश भक्ति गीत गायन या काव्य पाठ करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। प्रविष्टियों में हिंदी में तीन, तमिल में तीन, संस्कृत में एक और तमिल में दो कविता पाठ शामिल थे। प्रस्तुतियों ने भाषाई विविधता और भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को प्रतिबिंबित किया।

अनुपयोगी से उपयोगी

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य रचनात्मकता और स्थिरता को बढ़ावा देना था। तीन अधिकारियों ने अपनी नवीन रचनाएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें एक प्रतिभागी ने दो प्रविष्टियाँ प्रस्तुत कीं। इन कृतियों को उनकी मौलिकता और पर्यावरण-जागरूकता के संदेश के लिए सराहा गया।.

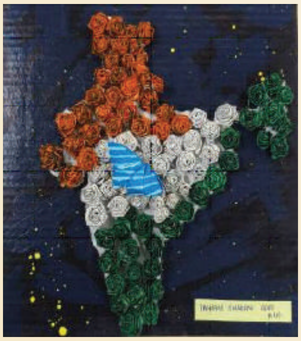

मेरी मातृभूमि भारत को पत्र

भारत माँ के ग्यारह उत्साही बेटे-बेटियों ने अपनी मातृभूमि को संबोधित करते हुए हार्दिक पत्र लिखे, जिनमें राष्ट्र के प्रति उनके प्रेम और उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षाओं को व्यक्त किया गया।

पत्रों में 2047 तक भारत को समृद्धि, समानता और नवाचार से परिपूर्ण राष्ट्र के रूप में देखा गया।

प्रश्नोत्तरी

"भारत @ 78" विषय पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। इसमें चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय और पुदुचेरी विकास कार्यालय के सभी अधिकारियों ने भाग लिया। पूछे गए प्रश्न भारत के स्वतंत्रता संग्राम, संविधान और स्वतंत्रता के बाद हासिल की गई प्रमुख राष्ट्रीय उपलब्धियों पर केंद्रित थे। इस कार्यक्रम ने भारत की गौरवशाली यात्रा और उपलब्धियों के बारे में ज्ञान को पुनर्जीवित किया।.

क्रॉसवर्ड

"विविधता में एकता" और "स्वतंत्रता आंदोलन के गुमनाम नायक" विषयों पर केंद्रित एक क्रॉसवर्ड प्रतियोगिता आयोजित की गई। अठारह प्रतिभागियों ने इस पहेली को हल किया और यह चुनौती प्रतिभागियों को सार्थक रूप से प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार की गई थी।.

पुरस्कार और प्रशंसा

उपरोक्त प्रत्येक प्रतियोगिता में विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। अधिकारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी और उनके बहुमूल्य समय के लिए सभी प्रतिभागियों को भागीदारी पुरस्कार प्रदान किए गए। इन आयोजनों ने न केवल स्वतंत्रता की भावना का जश्न मनाया, बल्कि कार्यालय के भीतर टीम भावना और सांस्कृतिक प्रशंसा को भी मजबूत किया।

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय में वार्षिक दिवस समारोह/जन्मदिन/सेवानिवृत्ति समारोह का आयोजन

HAPPY

Generated from eOffice by V.T. Subramanian, RC/CNRO(VTS), RC-Chennai, Housing and Urban Development Corporation Limited on 18/06/